# सुय्या

## एक ऐतिहासिक नाटक

क्रमांक......

अली मुहम्मद लोन

शारदा पुस्तकालय
( संजीवनी शो. द. केंद्र )
क्रमांक 324

# सुय्या

साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत

एक ऐतिहासिक नाटक

अली मुहम्मद लोन

लितकला, संस्कृति तथा साहित्य अकादमी, जम्मू-कश्मीर,
जम्मू

# सुय्या

मूल कश्मीरी से
श्री अली मुहम्मद लोन द्वारा अनूदित
एक ऐतिहासिक नाटक

ललितकला, संस्कृति तथा साहित्य
अकादमी, जम्मू द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण : जुलाई 1974

(C) : अकादमी

ओरियंटल प्रिंटिंग प्रेस, पक्का डंगा,
जम्मू द्वारा मुद्रित

मूल्य :

**SUYYA**

A Kashmiri Drama
Written and Translated by :
Sh. Ali Mohd. Lone.

# कश्मीर

हीरे पन्ने उपजाने वाली हमारी यह धरती
तीनों लोकों में सर्वाधिक प्रशंसनीय है
इस धरती के उत्तरी भाग में फैला
धनराज कुबेर का यह क्षेत्र उच्चकोटि का है।
इसी क्षेत्र में गौरी के पिता हिमालय को महानता
प्राप्त हुई है !
हिमालय में वह देश ( कश्मीर ) प्रशंसनीय है
जिस के चारों ओर हिमालय खड़ा है।

[ राजतरंगिणी—तरंग-१ ; श्लोक ३४ ]

# पूर्वरंग

"सुय्या" प्रस्तुत कर रहा हूं।

आप तक पहुंचने में इसे बड़ी देर लगी।

"सुय्या" मैंने पहली बार सन् 1964 में लिखा था।

इसके बाद दूसरी बार लिखा।

और अब तीसरी बार लिखकर छपवा रहा हूं।

जब मैं स्वयं इसके प्रति आश्वस्त हो गया, तो इसे आप तक पहुंचाना अनिवार्य लगने लगा।

'सुय्या' एक ऐतिहासिक नाटक है।

प्रत्येक ऐतिहासिक विषय-वस्तु के समान ही इस नाटक को भी कला के सांचे में ढालना कठिन तो था ही श्रमसाध्य कार्य भी था।

सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि 'सुय्या' पर प्राप्त ऐतिहासिक सामग्री अत्यल्प है।

सुय्या मेरी दृष्टि में एक सम्मानित और महान कश्मीरी था।

एक ऐसा कश्मीरी जिस पर कश्मीर को गर्व हो सकता है।

इस महान एवं गौरवशाली कश्मीरी पर नाटक लिखने की प्रेरणा मुझे उस समय भी मिली थी जब रंगमंचीय नाटक लिखने में मुझे दक्षता प्राप्त नहीं हुई थी। इस अभिलाषा ने मुझे उस समय भी बेकरार किया था जब मुझे नाटक लिखने को थोड़ी बहुत सूझबूझ आ गई थी।

परन्तु इस विषय को लेकर नाटक लिखना साहस का काम था।

मैंने साहस से काम लिया।

मुझे बहुत कुछ लिखना-पढ़ना पड़ा!

राजतरंगिणी से लेकर आजतक लिखे गए साहित्य में से, जो मुझे सरलता से प्राप्त हो सका, उसे ढूंढा। मैं नाटककार हूं। मगर इस नाटक की रचना करने के लिए मुझे इतिहासकार और अनुसंधित्सु भी बनना पड़ा। अपने इतिहास से मैं पहले भी थोड़ा बहुत परिचित तो था ही परन्तु फिर भी मुझे बहुत परिश्रम करना पड़ा। इस से कई बार तंग भी आ गया। मैं बाल की खाल उतारने वालों में से नहीं हूं लेकिन सुय्या ने मुझ से यह सब भी करवाया। मैं ने कल्हण पर सन्देह किया। उस के बहुत से बयानात या तो मुझे सिरे से ही ग़लत नज़र आये, या जान-बूझकर ग़लत तरीके से पेश किए हुए महसूस हुए।

सुय्या इन्सान नहीं था। वह स्वयं अन्नपति था।

इस बात पर विश्वास इसलिए न कर सका क्यों कि मैं मातृ–भक्त हूं ।

कुछ बातें हैं, और बस !

सुय्या इंसान नहीं था, देवता था ।

सुय्या मानव-वेश में उपस्थित अन्नपति था ।

सुय्या हकीम था ।

सुय्या इंजीनियर था ।

सुय्या विद्वान था ।

यह कुछ मान्यताएं हैं । इन मान्यताओं का आधार अब तक स्थिर है ।

सुय्या अभी तक हम में उपस्थित है ।

वितस्ता पर नियंत्रण पाने की दिशा में वह अब भी हमारा मार्गदर्शक है । इस समस्या को सुलझाने के लिए हम आज तक उन ही राहों पर चल रहे हैं जिन्हें सुय्या ने आज से ग्यारह सौ साल पहले ही पार कर लिया था । उस के चरण-चिन्ह आज तक वितस्ता के किनारों, बांधों और कुन्डों पर उपलब्ध हैं । यह चिन्ह वुल्लर झील के पास भी देखे जा सकते हैं । यह मान्यताएं और इनके आधार अपने आप में एक बहुत बड़ा मानवीय नाटक हैं और इस नाटक का नायक सुय्या है ।

एक भारी मानवीय समस्या का समाधान ढूंढना था ।

इस समस्या का समाधान ढूंढने का श्रेय सुय्या को है ।

आज से ग्यारह सौ वर्ष पहले खेला गया यह नाटक हमारा इतिहास है लेकिन यह उस नाटक से अलग है जो मैं लिखना चाहता था। यह सामग्री उस नाटक के लिए पर्याप्त न थी।

कल्हण ने सुय्या को एक आदमी, एक इन्सान नहीं माना।

मेरे विचार से इसके कुछ विशेष कारण हैं—

सुय्या ने जो काम किया उससे पहले वह किसी और से नहीं हो सका था। बाढ़, अकाल, महामारी और मौत को अपना भाग्य मानकर मक्खियों की भांति चुप-चाप मरने वाले इन्सानों ने जब एक इन्सान को नियति में इस प्रकार का परिवर्तन लाते हुए देखा तो वे इस पर विश्वास न कर सके।

इंसान होने पर भी उन्होंने उसे भगवान का अवतार माना।

सुय्या चंडाल का बेटा था।

चंडाल का बेटा होने पर भी उसने वह कार्य किया जिसे बड़े-बड़े ब्राह्मण, विद्वान और हकीम भी न कर सके थे।

इसीलिए यह बात भी घड़ी गई लगती है कि सुय्या चंडालिनी का बेटा नहीं था और कि उसने उसे रास्ते पर से उठा लिया था। उसने सुय्या को अपना दूध भी नहीं पिलाया था।

मेरे विचार से यही दो बड़े कारण हैं जिनके चलते कल्हण ने सुय्या को देवताओं का दर्जा देकर उसकी मानवीय महानता को कम करने की कोशिश की है।

यह भी सम्भव है कि कल्हण से भी बहुत पहले सुय्या के विषय में ऐसी बातें प्रचलित हो चुकी होंगी। एक ज़िन्दा चरित्र होने पर भी सुय्या को एक 'मिथ' बना कर प्रस्तुत किया गया है। कल्हण ने भी इसी मिथ को आगे बढ़ाया है।

जब एक व्यक्ति को इस प्रकार देवताओं का सा सम्मान प्रदान किया जाये तो इतिहासकारों को उस के व्यक्तिगत जीवन के सम्बन्ध में कुछ कहने को क्या आवश्कता हो सकती थी।

मैं इस व्यक्ति के विषय में नाटक लिखना चाहता था, देवता के विषय में नहीं।

यह सच है कि कल्हण से लेकर आजतक के इतिहासकारों, विद्वानों एवं शोधकर्ताओं ने सुय्या को बड़े-बड़े खिताब दिए हैं लेकिन इन खिताबों में बहुत कम इंसानी और साफ नज़र आते हैं। सुय्या—व्यक्ति सुय्या—इन खिताबों के अंधेरे में खो जाता है। मैं इस अंधेरे को मिटा कर सुय्या का असली चेहरा देखना चाहता था लेकिन मेरी अपरिपक्वता मेरी राह की रुकावट बन रही थी।

सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि संस्कृत भाषा से मेरा दूर का भी परिचय नहीं है और संस्कृत ही एक ऐसी भाषा है जिसका ज्ञान कश्मीर ही नहीं, सारे भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास, संस्कृति और सभ्यता को जानने और परखने के लिए जरूरी है।

एम० ए० स्टाइन का व्याख्यासहित राजतरंगिणी का अनुवाद इस सन्दर्भ में मेरे लिए उपयोगी सिद्ध हुआ। इस विद्वान इतिहासकार ने कल्हण की राजतरंगिणी पर जो कार्य किया है वह

अभूतपूर्व है। संस्कृत शब्दों के अनुवाद से भी कहीं महत्वपूर्ण है स्टाइन द्वारा की गई इन छन्दों की व्याख्या। एक-एक शब्द की, एक-एक बात की स्टाइन ने वैज्ञानिक ढंग से जो व्याख्या की है वह इतिहास-सम्बन्धी उनकी सूझ-बूझ की परिचायक है।

इस अनुवाद की सहायता से मेरी कई कठिनाइयां समाप्त हो गईं।

'सुय्या' नाटक का मूलाधार कल्हण की राजतरंगिणी ही है परन्तु इस नाटक में स्टाइन की व्याख्या में दिए गए तथ्यों को ही वरीयता दी गई है। वास्तविकता की कसौटी पर परखने पर यह कहा जा सकता है कि इतना सब होने पर भी सुय्या एक मनुष्य के रूप में पूरी तरह हमारे सामने नहीं आ पा रहा था।

कुछ एक ऐतिहासिक पात्रों को लेने के साथ ही साथ मैंने कुछ पात्रों को स्वयं ही गढ़ा है। यह जरूरी भी था क्योंकि इन पात्रों की सहायता से ही मैंने सुय्या के व्यक्तित्व का मानवीय पहलु उजागर किया है।

राजा अवन्तिबर्मन

सुय्या चंडालिनी

**और**

सुय्य

यह तीनों ऐतिहासिक पात्र हैं। इनके अतिरिक्त इस नाटक में दर्जनों स्त्री, पुरुष, बच्चे और बूढ़े भी आए हैं। इन

पात्रों के साथ मैंने मनमाना व्यवहार किया है क्योंकि किसी भी सृजनशील कलाकार को किसी कलाकृति का निर्माण करने के सिलसिले में इतनी स्वतंत्रता देना उचित भी है और आवश्यक भी।

कल्हण द्वारा दिए गए वर्णन को पढ़ने से हमारे मन-मस्तिष्क में उस समय के वातावरण एव परिस्थितियों का जो चित्र उभरता है अपने तौर पर मैंने उसे बिगाड़ने से बचाने का यत्न किया है। एक विशेष प्रकार का मद्धम-मद्धम सा देवमालाई वातावरण इस नाटक में भी अनुभूत होता है। हिन्दू संस्कृति का गहन प्रभाव भी इस नाटक में मुखरित है।

इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए पात्रों की भाषा भी आज की कश्मीरी से कुछ हट कर लिखी गई है। मैंने हर सम्भव प्रयत्न किया है कि यह वातावरण एवं परिस्थितियां यथार्थ जीवन से भिन्न न दिखाई दें परन्तु मैं ऐसा करने में पूर्णतया सफल नहीं हो सका हूं क्योंकि कल्हण एक सिद्धहस्त कवि है। उसके वर्णन में जो जादू है उसने मुझे प्रभावित किया है। और मैं इस प्रभाव से पूर्णतया मुक्त भी नहीं हो सका हूं। फिर भी बहुत सी चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें मैंने एक यथार्थवादी कलाकार के रूप में देखा, समझा और परखा है। उदाहारणार्थ मेरा लेखक हृदय यह नहीं मान सका कि सुय्या ने अपनी माँ का दूध नहीं पिया था। चाहे वह चंडालिनी ही थी, मैंने सुय्या को उस महान माँ का दूध पिलाया।

सुय्या का वास्तविक नाम क्या है इसका पता नहीं चलता। वह अपनी माँ के नाम से ही प्रसिद्ध हुआ। इसलिए मैंने कुछ निर्णय लिए :

सुय्या की माँ उस के चरित्र का निर्माण करती है, उसे इस बात के प्रति सचेत करती है कि वह एक मनुष्य है। वह उसे पाठशाला में भेजती है। उसे विद्वान बनाती है। वह उसे बार-बार स्मरण कराती रहती है कि वह एक सीधा-सादा इन्सान नहीं है अपितु वह एक मनुष्य है जिसे सब का भला करना है, सब का भला सोचना है। उसने स्वयं कष्ट सहकर दूसरों को सुविधाएं प्रदान करनी हैं।

सुय्या की यह शिक्षा-दीक्षा चंडालिनी के झोंपड़ें में होती है और यही झोंपड़ी आगे चलकर अवन्तिबर्मन जैसे शासक के लिए तीर्थस्थान बन जाती है।

मैंने अपने नाटक में इस भाग्यवान माँ के चरित्र को उभारने का भरपूर यत्न किया है। दूसरे सभी पात्र उसके आगे-पीछे घूमते फिरते हैं। इतिहास साक्षी है कि सुय्या को उसकी मां ने पढ़वाया और माँ के दूध का बदला चुकाने के लिए उसने स्वयं भी सुय्या नाम को अपना लिया और माँ के नाम से एक नगर बसाया। इससे सिद्ध होता है कि सुय्या पर उसकी माँ के व्यक्तित्व का अत्यधिक प्रभाव था। उसकी इस कृपा को वह जीवन भर भुला नहीं पाया और इस दूध का ऋण उतारते-उतारते उसने माता-कश्मीर का ऋण भी उतार दिया।

मैंने 'सुय्या' को एक मानवीय नाटक के रूप में प्रस्तुत किया है।

इसमें एक ओर प्रेम है तो दूसरी ओर कर्त्तव्य !

एक ओर आराम है तो दूसरी ओर कष्ट !

एक ओर निर्द्वन्द्व और शान्त गृहस्थी है तो दूसरी ओर कठिन संघर्ष।

एक ओर हृदय है तो दूसरी ओर मस्तिष्क।

एक संघर्ष है जो किसी भी संवेदनशील प्राणी के भीतर आरम्भ हो सकता है। मेरा नाटक इसी संघर्ष को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। एक बहुत बड़ी मानवीय समस्या के साथ जुड़ा यह संघर्ष स्वयं अपने में एक नाटक है।

इस नाटक में इन्सान उलझा हुआ दिखाई देता है।

देवताओं का उसके साथ कोई सम्बन्ध नहीं था।

इस मानवीय समस्या को मानव ने ही सुलझाया।

मैं स्वयं भी मानव मात्र की महानता का पुजारी हूं। मेरा यह नाटक मानव मात्र की महानता की स्वीकृति है। मैं इस बात से संतुष्ट हूं कि मैं सुय्या के चरित्र को लेकर इस नाटक की रचना करने में सफल हो सका।

यह नाटक मेरी ओर से, एक लेखक की ओर से, हमारे स्वर्णिम इतिहास तथा गौरवशाली अतीत के लिए एक भावभीना और प्यार भरा नज़राना है।

—अली मुहम्मद लोन।

# प्रमुख पात्र

| स्त्री पात्र | पुरुष पात्र |
|---|---|
| चंडालिनी | चंडाल |
| चन्द्रकान्ता | पंडित |
| | सुय्या |
| | राजा अवन्तिबर्मन |
| | मंत्री |
| | जयदेव |

# सहायक पात्र

| | |
|---|---|
| पहली स्त्री | एक पंडित |
| दूसरी स्त्री | दूसरा पंडित |

एक लड़की

तीसरा पंडित

एक मज़दूर

दूसरा मज़दूर

तीसरा मज़दूर

एक देहाती

पुरुष—I

पुरुष—II

पुरुष—III

ढिंढोरची

एक लड़का

## मौन पात्र

कुछ दरबारी, कुछ पुरुष तथा कुछ स्त्रियां

## सुरया

[एक कच्ची सड़क मंच के आर-पार चली गयी है। इस सड़क के एक ओर वेद के वृक्षों के तने और कुछ झुकी हुई टहनियां नज़र आ रही हैं। बायीं ओर एक झोंपड़ी का एक भाग नज़र आ रहा है। हर ओर घास-फूस और पत्ते बिखरे हुए हैं। मंच का पिछला भाग पेड़ों से भरा-पुरा है। सारा दृश्य एक ग्रामीण वातावरण की झलक प्रस्तुत करता है।

मंच के मध्यभाग में सूत्रधार एक पत्थर पर बैठा हुआ है। उसने अपनी दोनों बाहें घुटनों में फंसा दी हैं और ज्यों-ज्यों पर्दा उठता है त्यों-त्यों वह अपनी बाहें खुली छोड़ता जाता है। वह एकटक दर्शकों की ओर देखे जा रहा है। फिर वह अंगुली उठा कर उनकी (दर्शकों की) ओर संकेत करता है तथा हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाता है]

सूत्रधार :- हा! हा!! हा!!! हे! हे!! हे!!! ही! ही!! ही!!!

[हंसते-हंसते ही खड़ा होता है और उछल कर मंच के सामने वाले हिस्से में आ जाता है। वह भाटों के समान एक बार फिर दर्शकों की ओर अंगुली उठाता है]

सूत्रधार :- तो तुम आ ही गए ? न आते तो करते भी क्या ? तुम्हारे इस नगर में और है ही क्या जो तुम खेलो कूदो, हंसो और अपना मनोरंजन कर सको ! जो तुम यह भूल जाओ कि भगवान ने इंसान के साथ पेट भी लगाया है जो केवल पानी और पवन से भरा नहीं जाता इसके लिए चाहिए-अन्न ! इसके लिए चाहिए-चावल ! और चावल खेतों में पैदा होते हैं । परन्तु यह खेत कभी तो बाढ़ का निशाना बनते हैं और कभी सूखे की भेंट चढ़ जाते हैं और तुम्हारा पेट रोज़ ही खाली रहता है । रोज़ ही खाली, भूखा-प्यासा, रोता–पीटता !

[ यहां आकर सूत्रधार चुप रहता है उसकी अंगुली जैसे पत्थर बन जाती है और वह अपनी पीठ दर्शकों की ओर कर लेता है तथा इसके बाद एक बार फिर उनकी ओर देखकर बड़ा गम्भीर बन जाता है ]

सूत्रधार :- पर तुम डरो नहीं । मैं कोई भाषण देने नहीं आया क्योंकि मैं जानता हूं कि आज की यह पीढ़ी केवल भाषण देती है, भाषण सुनती है, भाषण खाती है, भाषण पीती है, भाषण पहनती है, भाषण ओढ़ती है । आज की पीढ़ी का चलना–फिरना, उछलना–कूदना, हंसना रोना यही भाषण बन गया है—केवल भाषण ! और कुछ नहीं । मैं जानता हूं भाषण सुन-सुन कर तुम तंग आ चुके हो । तुम्हारे कान भाषण सुन-सुन कर घायल हो चुके हैं । तुम्हारा भेजा भाषण सहते-सहते सूख गया है । तुम्हारा हृदय और तुम्हारी आत्मा इन के कार



सुय्या

ठण्डे पड़ चुके हैं इसी कारण तुम भाषणबाजों से भाग कर, उन्हें चकमा देकर आज का यह नाटक देखने आए हो। अपना मनोरंजन करने आए हो।

[ यहां आकर सूत्रधार स्वयं भी भाषण देने वालों की भांति बाहें उछाल-उछाल कर और एड़ियां उठा-उठाकर बोलना आरम्भ कर देता है ]

सूत्रधार :- हाँ तो मैं कह रहा था कि मेरे आदरणीय बन्धुओ, बहनो तथा भाइयो। हम आपका हार्दिक स्वागत करते हैं और हमें आशा है कि आप हमारा साथ देंगे तथा यह जो समस्या हमारे सामने आ खड़ी हुई है उसे निपटाने में अपना सहयोग देंगे। हमारे सुर में अपना सुर मिलायेंगे कि एक गूंज पैदा हो और सारा संसार जान जाये। जैसा कि किसी कवि ने कहा है–अकाबी रूह जब बेदार होता है जवानों में, नज़र आता है अपना मंज़िल आस्मानों में। हाँ, हाँ हम संसार की परवाह नहीं करते। वह क्यों! इसलिए कि हमारे भाइयो और बुज़ुर्गो.........

[ तुरंत अपने हाथ से अपना मुंह बन्द करता है और लज्जित होकर कहता है ]

क्षमा करना। मैं तो स्वयं ही भाषण देने पर उतर आया था। मगर करूं क्या। हमारे इस नगर में साल के बारहों महीने केवल भाषणों की ऋतु ही चलती रहती है और एक सीधी-सादी सी बात भी भाषण

नज़र आने लगती है, अच्छा जाने दो इस बात को। आओ ! हम अपने मतलब की बात करें।

[ नटों की भांति आवाज़ बदल कर ]

मैं एक प्रश्न करूंगा। केवल एक प्रश्न जो इसका उत्तर देगा वह इस संसार में तो सुखी रहेगा ही परलोक में भी उसे शांति प्राप्त होगी। बताओ अन्नपति कौन था?

बहुत सी आवाज़ें:- [ मंच के बाहर से ] अन्नपति सुय्या।

सूत्रधार :- [ मंच के दोनों विंगों की ओर देखकर ] धन्य हो ! सुय्या सचमुच अन्नपति था। ग्यारह सौ वर्ष पहले का सुय्या। इस नगर का वह प्रसिद्ध वैज्ञानिक जिसने वितस्ता के मुंह में लगाम दी थी और हमारे इस नगर में सुख, शांति और सम्पन्नता का एक सुनहरी युग आरम्भ किया था।

[ नगाड़े पर चोट पड़ती है और सूत्रधार अपनी बायीं ओर देखता है। बायीं ओर से एक ढिंढोरची प्रवेश करता है। नगाड़े पर चोट मारता है। दायें-बायें से कुछ पुरुष और स्त्रियां आती हैं। सूत्रधार अचम्भित होकर ढिंढोरची की ओर देखता है परन्तु उसकी उपस्थिति से अनभिज्ञ होने का भाव प्रकट करता है। ढिंढोरची नगाड़ा बजाता हुआ इधर-उधर घूमता रहता है। सूत्रधार कभी उसके सामने से निकलता है और कभी उसके पीछे चलता है मगर ढिंढोरची उसको भुला कर बड़े ज़ोर से ढोंढी पीटता है ]

ढिंढोरची :- सुनो भाइयो !
सुनो बहनो ! !
ध्यान से मेरी बात सुनो ! ! !

[ फिर नगाड़े पर चोट मारता है तथा इधर-उधर घूमने की तैयारी करता है मगर सूत्रधार उसके सामने आकर उसको रोक देता है ]

सूत्रधार :- कह दो जल्दी
जो कहना है
ढोल बजाकर
शोर मचाकर
वर्ना देखो
कुछ न मिलेगा
क्या कहना है ?

ढिंढोरची :- [ अपनी ही तरंग में ] नगरवासियों को सूचना दी जाती है कि वह आने वाली वर्षा ऋतु से पहले ही घर बार छोड़कर पहाड़ों की ओर चले जाएं । घर की सारी सामग्री ढोर-डंगर, मुर्गी-बतख सब कुछ साथ लेकर चले जाएं । पंडितों और भविष्य वक्ताओं के अनुसार अबकी बार पिछले वर्ष से भी अधिक भयंकर बाढ़ आयेगी । इसीलिए नगरवासियों को आदेश दिया जाता है कि वह इस विपत्ति के आने से पहले ही नगर छोड़कर चले जाएं ।

[ नगाड़ा बजाते-बजाते एक ओर से निकल जाता है लोग भी निराश होकर निकलने की तैयारी करते हैं। सूत्रध एक बार फिर पत्थर पर बैठकर अपने सिर को दोनों हाथों थाम लेता है ]

एक पुरुष :- हे भगवान ह ! मने कौन सा पाप किया है ? यदि इए वर्ष भी बाढ़ आई तो हम कहीं के न रहेंगे। हमार धान अभी तक खेतों में ही है। हमारे घर खाली हैं अगर बाढ़ आई तो हम भूखे मर जायेंगे। हे भगवान

एक स्त्री :- आखिर इस मुसीबत से छुटकारा पाने का कोई उपा भी है कि नहीं। क्या हमें रोज़-रोज़ ऐसे ही उजड़ है ?

दूसरा पुरुष:- यह तो भगवान की इच्छा है, कोई क्या कर सकता है

एक स्त्री :- नहीं, नहीं यह भगवान की इच्छा नहीं हो सकती। व दयालु भगवान ऐसे क्रूर नहीं हो सकते !

एक पुरुष :- क्या बक रही है पगली ? तुझे इन विचारों में क्य उलझना ?

एक स्त्री :- वाह ! मैं नहीं तो और कौन उलझेगा इन विचारों में मेरे बच्चे भूखे मर जायें तो मैं कहाँ तक सहन क सकूंगी ?

एक पुरुष :- बस भगवान का नाम ले। हो सकता है कि वही ह बचायें।

सूत्रधार :- [पत्थर पर से उठ कर] इस विपत्ति से बचने का केवल एक ही रास्ता है........

दूसरा पुरुष:- वह कौन सा रास्ता है ?

सूत्रधार :- इस देश में एक दूसरे कश्यप ऋषी को जन्म लेना होगा।

एक पुरुष :- अरे अगर ऐसा ही युग होता तो हम भूखे क्यों मरते ?

सूत्रधार :- युग है ! कश्यप ऋषी को दूसरा जन्म लेना है। अरे ! उसने तो जन्म ले भी लिया है। हां ! वह पैदा हुआ। हाँ, हाँ ! वह जन्म ले चुका। सुनो...सुनो उसकी आवाज़ सुनो।

[सभी नर-नारी सूत्रधार को पागल जानकर चले जाते हैं। सूत्रधार उनकी ओर देखता है। होंठों पर बड़ी तीखी मुस्कान उभारता है और इसके पश्चात ध्यान लगा कर कुछ सुनने का यत्न करता है। फिर एक विंग की ओर जाने लगता है। ]

सूत्रधार :- हां ! यह उसी की आवाज़ है। मैं ढूंढूंगा उसे। मैं उसके दर्शन करूंगा।

[एक विंग से निकलता है। चंडालिनी झोंपड़ी के पास से निकल आती है। झाड़ू और टोकरी उसके हाथ में हैं। वह टोकरी को एक तरफ रख कर झाड़ू देने लगती है। एक बालक और बालिका एक दूसरे का पीछा करते हुए मंच पर दौड़ते-भागते हैं। मंच पर कुछ क्षण भागने, चिल्लाने और

हंसने के पश्चात वह चले जाते हैं चंडालिनी के हाथ से झाड़ू गिर जाता है। वह खड़ी होकर दोनों हाथों से छाती थाम लेती है। ]

चंडालिनी :- लगता है जैसे कोई मेरे वक्ष को चूम रहा है। मेरी सूखी छातियों में यह सरसराहट कैसी? कहीं इन बालकों ने मुझे याद तो नहीं दिलाया कि मैं बांझ हूं। मेरी कोख एक जलती हुई धूनी की भांति है। किसी बालक को देखकर मेरे तो आंसू निकल पड़ते थे परन्तु आज मुझे क्यों ऐसा लग रहा है कि जैसे मेरे ऊपर भी वसन्त घिर आया है। हे भगवान! तेरी माया अपरम्पार है जाने क्या करने पर तुला हुआ है।

[ फिर से झाड़ू देने लगती है। दूर से एक नवजात शिशु के रोने की आवाज़ आती है। चंडालिनी रुक जाती है और एक बार फिर उसका हाथ अपने वक्ष की ओर चला जाता है। शिशु के रोने की आवाज़ निरन्तर आ रही है। चंडालिनी झाड़ू फैंक कर आवाज़ की दिशा में भागती चली जाती है। वही दो बालक एक बार फिर चीखते-चिल्लाते मंच पर आ जाते हैं। मंच के एक दो चक्कर काट कर वे फिर निकल जाते हैं। चंडालिनी हाथों में एक टोकरी लिए आती है। उसे नीचे रख देती है तथा उस पर लिपटा हुआ कपड़ा हटा देती है। सहसा वह दोनों हाथों से ज़ोर से अपने वक्ष को थामती है। उसके चेहरे पर ममता झलक आती है परन्तु तुरन्त ही किसी दुराशंका से उसका चेहरा बुझ जाता है ]



सुय्या

चंडालिनी :- मुझे क्या ? कोई पापी मां इसे चौराहे पर छोड़कर भाग गई होगी। मुझे इस से क्या ? [ इसके बाद टोकरी की ओर देखती है और बालक के हाथ-पाँव पर हाथ फेरती है ] मगर ऐसा सुन्दर मनमोहक बालक यूं छोड़ कर चली गई ? कैसे सहन हो सका उससे ? हाय ! यह कमल जैसे हाथ-पांव, यह गुलाबी होंठ, यह कजरारे नयन, यह प्यारी-प्यारी नाक और यह घुंघराले बाल। कैसी हत्यारनी होगी, जो छोड़कर चली गई इसे [ खड़ी होती है ] तो फिर मुझे क्या ? होगा किसी का। अभी ढूंढ़ते-ढूंढ़ते आ जायेगा... ! मगर पापिन तो न थी ? गिर तो नहीं गई थी ? हां, हां ! वही होगा। नहीं तो ऐसा सुन्दर बालक कौन छोड़कर चला जायेगा। [ कपड़ा ठीक से रख देती है और झाड़ू उठा कर काम करने लगती है। लेकिन फिर रुक जाती है और झाड़ू दूर फैंक देती है। झोंपड़ी की ओर देखकर पुकारती है ] ज़रा इधर आओ तो ! सुन रहे हो ! ज़रा जल्दी ! ! [ बालक फिर रोने लगता है और चंडालिनी उसे पुचकारती है ] हाय राम ! यह तो मेरी ओर देखकर मुस्करा रहा है।

[ चंडाल झोंपड़ी से बाहर आता है और टोकरी की ओर देखे बिना ही अपनी आंखें खोलने का प्रयत्न करता है ]

चंडाल :- क्या हुआ री ? शोर काहे को मचा रही है ? टोकरी ज़्यादा भर गई क्या ? हां, हां, ! क्यों नहीं। करना क्या है लोगों को। सारा कूड़ा-करकट सड़कों पर फैंक

देते हैं। जानते हैं न कि हम क्या मर गए हैं इधर ? [ चंडालिनी की ओर देखता है और पहली बार उसकी नज़र टोकरी पर पड़ती है] यह क्या है री ?

चंडालिनी :- टोकरी है !

चंडाल :- हां ! पर इसमें है क्या ? यह कपड़ा काहे को लिपटाये रखा है इस पर ?

चंडालिनी :- स्वयं देख लो ।

चंडाल :- [ टोकरी का कपड़ा उठा कर अचरज से ] यह क्या है री ?

चंडालिनी :- बालक !

चंडाल :- किसका है ?

चंडालिनी :- भगवान जानें ?

चंडाल :- [कुछ सोचकर] हुं ! तो यह बात थी। तेरा पाँव भारी था री और मुझे बताया भी नहीं। धन्य हो पत्नी, धन्य हो।

चंडालिनी :- यह क्या कह रहे हो ! थोड़ा सोच-समझकर बोला करो।

चंडाल :- हाँ, हाँ ! बस सोच-समझकर तो तू ही सब कुछ करती है न ? एक तो बात छिपाई, तिस पर यह शोर ?

चंडालिनी :- क्या छिपाया है मैंने ? क्या शोर मचाया है ?

चंडाल :- रहने भी दो ? परन्तु यूं घर से बाहर निकलकर चौराहे पर बच्चा जनना उचित है क्या ?

चंडालिनी :- [ जोर-जोर से हंसकर ] हा, हा, हा ! बुद्धू, निरे बुद्धू ! !

चंडाल :- हाँ भई बुद्धू तो हूं ही नहीं तो मुझे पता न चल जाता। अच्छा चल, जो हुआ सो ठीक हुआ। चल इसे ले चलें।

चंडालिनी :- किसे ले चलें ?

चंडाल :- अपने इस बेटे को। इस नन्हें बालक को।

चंडालिनी :- पराया बालक ! तुम्हारा न मेरा। हमारे भाग्य कहाँ थे ऐसे ?

चंडाल :- अरी बुद्धू, भगवान ने तुझे ही इस योग्य जाना और बिना किसी कष्ट के यह बालक भेज दिया। चल उठ इसे भूख लगी होगी !

चंडालिनी :- कैसी बातें कर रहे हो तुम ? एक पराये बालक को मैं कैसे अपने घर ले जाऊं ? जाने किस का होगा ? रहने दो यहीं।

चंडाल :- पगली ! यदि यह किसी का होता तो यूं इस सड़क पर छोड़कर चला ही क्यों जाता ? तू ऐसा मान ले कि यह अब हमारी ही संतान है [ खुश होकर ] मैं इसे पाल-

पोस कर बड़ा करूंगा । यह मेरे बुढ़ापे का सहारा बनेगा ।

चंडालिनी :- तुम सोचते होगे कि पाल-पोस कर तुम इसे भी एक चंडाल ही बनाओगे ।

चंडाल :- चंडाल ?

चंडालिनी :- हाँ, हाँ ! चंडाल । परन्तु यह तुम्हारा भ्रम है !

चंडाल :- परन्तु मैंने कब कहा कि इसे चंडाल बनायेंगे । मैं तो इसे पढ़ाऊंगा...... ।

चंडालिनी :- और विद्वान बनाओगे यही न ?

चंडालिनी :- हां विद्वान बनाऊंगा [ टोकरी के पास जाकर बालक को देखकर ] मैं अनुभव कर रहा हूं कि इस बालक के कारण हमें बहुत लाभ पहुंचेगा । इस के कारण हमारा मान बढ़ेगा और इसी के कारण हम हमेशा जिन्दा रहेंगे ।

चंडालिनी :- हुं ! चंडाल का किसने मान किया है आज तक ?

चंडाल :- कोई भला ही हमारा मान न करे परन्तु इस बालक को कौन चंडाल कहेगा ?

चंडालिनी :- नहीं तो क्या ऊंची जाति का ब्राह्मण कहेंगे ? सब यही कहेंगे कि इसे सुय्या चंडालिनी ने पाला-पोसा, बड़ा किया......नहीं, नहीं...मैं इस बेचारे को अपने घर नहीं ले जाऊंगी । मैं काहे को इसका जीवन नष्ट करूं ? मेरी कोख भले ही सदा के लिए सुलगती हुई धूनी सी

रहे पर इस अनाथ को मेरे कारण कोई कष्ट नहीं होना चाहिए ।जाओ-जाओ ! इसे किसी को दे आओ । अनाथ है न । लोग हाथों हाथ लेंगे ।

चंडाल :- क्या बक रही है तू पगली ? इसे कौन अनाथ कहता है ? आज से मैं इस का पिता और तू इसकी माता, हाँ ! [ बालक रोने लगता है ] मैं इसे उठाता हूं । घर ले जाऊंगा । झाड़ू लगाने में कोई देर नहीं हुई अभी । देख ना, इस बेचारे को भूख लगी है । देख तो कैसे अंगूठा चूस रहा है ?

चंडालिनी :- भूख लगी है तो मैं क्या करूं ? मैं इस के लिए कहां से दूध लाऊं ? [ निराशा से ] मेरी इन सूखी हुई छातियों में दूध कहां? [ वक्ष की ओर हाथ ले जाकर हर्ष और आश्चर्य की भावनाओं के साथ ] मेरे भगवान ! मैं पापी हूं । तुमने यह सुन्दर सा बालक मेरे लिए भेजा परन्तु मैं अपनी ही शंकाओं में डूबी हुई हूं । तुमने मेरी इन सूखी हुई छातियों में दूध का सागर भर दिया । मेरा सीना दूध से भीग गया मर मैं पापी फिर भी कहती हूं कि यह मेरा बालक नहीं है ।

चंडाल :- ए री क्या बक रही है तू ? दूध और तेरी छातियों में । असम्भव !

चंडालिनी :- [ उसे अपना भीगा हुआ हाथ दिखाकर ] यह देखो, मैं बक नहीं रही । इसे भगवान का अनुग्रह कहते हैं । उस की

माया। यह बालक उसी की माया का एक रूप है। मैं इसे नहीं जाने दूंगी।

[ टोकरी के पास जाकर बालक को नमस्कार करती है ]

चंडाल :- [ खड़े होकर ] जाने इसमें क्या भेद है? आज तक तो तेरी छातियों में कभी दूध नहीं उतरा था। कौन जाने तुझे इसे अपना दूध पिलाना भी चाहिए या नहीं? कहीं कल को कोई इसे तुम्हारे दूध का ताना न दे?

चंडालिनी :- [ तेज और क्रोध के साथ ] यदि यही कुछ होने वाला है तो भगवान ने इसे भेजा ही क्यों?

चंडाल :- कोई बात नहीं। इसे किसी शूद्र स्त्री का दूध पिलायेंगे।

चंडालिनी :- नहीं, कभी नहीं। अगर यह बालक मेरा है तो इसे मेरा ही दूध पीना होगा। मैं माँ हूं। मां ऊंचा-नीची जाति की नहीं होती, केवल माँ होती है, केवल एक माता। मेरी छातियों का दूध अमृत का समुद्र है। इसमें कोई भेदभाव नहीं। माँ के दूध में जाति का प्रश्न कहां से उठता है? लोग तो बच्चों को पालने के लिए भी कभी-कभार कुत्तों का दूध तक पिलाते हैं और उसके मुकाबिले में मैं...इंसान हूं, माँ हूं।

चंडाल :- अच्छा बाबा तू ही पिला इसे दूध। देख तो कैसे टुकर-टुकर तुझे देखा रहा है, जैसे तेरी प्रतीक्षा कर रहा हो



सुय्या

चंडालिनी :- जाओ, तुम इसे ले जाओ मैं अभी आती हूं ।

[ चंडाल दोनों हाथों में टोकरी उठाता है और बालक को ओर देखकर कहता है...]

चंडाल :- चल मेरे बेटे । देख रोना नहीं । मुंह मत बिसूरना । मेरी पत्नी अभी तुझे दूध पिलायेगी । इतना दूध कि तू शीघ्र ही बलवान हो जायेगा । हाँ ! [ जाता है ]

चंडालिनी :- हे प्रभु ! तेरी माया सचमुच अपरम्पार है । तूने मेरे उजाड़ घर को फिर से बसाया, नया जीवन दिया मुझे । मेरी ममता की लाज रखी ।... परन्तु मैं फिर भी इस शंका में घिरी हुई हूं कि यह बालक हमारे जैसा नहीं है । जाने किस जाति का है । जब तक मुझ पर यह भेद न खुल जाए तब तक मैं इसी शंका का शिकार रहूंगी । प्रभु बहुत देर तक अंधेरे में न रखना । मुझे इसका भेद जानना ही होगा प्रभु ।

[ टोकरा और झाड़ू उठाकर चली जाती है । उसके जाने के साथ ही मंच पर धीरे-धीरे अंधेरा हो जाता है । इसी अंधेरे में पांच-छः बालकों का शोर उभरता है । उजाला हो जाता है । वही पहला दृश्य पर इस बार झोंपड़ी नजर नहीं आती । वही पहला सा वातावरण, वही वेद के पेड़ । पेड़ों के पास पाठशाला का पंडित बालकों को पढ़ा रहा है । पंडित दायीं ओर बैठा है तथा बालक उसके सामने बैठे हुए हैं ]

गुरु :- यहां चारों ओर जल ही जल था । आस-पास ऊंचे-ऊंचे

पर्वत थे और बीच में पानी। एक बहुत बड़ी झील जि
सत्तीसर कहते थे। इसी सत्तीसर में एक हत्यारा दे
रहता था। यह देव जल से निकल कर आस-पास
पर्वतों पर तप करने वाले लोगों की हत्या किया करत
था। तब हम सब के पिता कल्याणकारी कश्यप ऋ
आ गए। उन्होंने देवताओं की सहायता से वराहमुल
निकट पर्वत को छेदा। सत्तीसर से जल निकल प
और इसके साथ ही वह जलोद्भव नामक हत्यारा दे
भी मर गया।

सुय्या :- [ दस-बारह वर्ष की अवस्था का बालक ] गुरुदेव य
कश्यप ऋषी कल्याणकारी थे तो उन्हों ने हमें बाढ़ों
मुक्ति क्यों नहीं दिलाई ?

गुरु :- सुय्या ! उन्हें एक बार फिर आना है। आए बिना औ
उपाय ही नहीं। उन्होंने सोचा था कि वे जन्म-मरण
बन्धन से मुक्त हो गए परन्तु उनका यह नगर, इ
नगर के निवासी अभी तक उजड़े हुए दुर्दशा झेल र
हैं।

सुय्या :- गुरुदेव फिर वह आते क्यों नहीं ?

चन्द्रा :- सुय्या ! तुझे क्या है ? आना होगा तो आयेंगे। कि
पर भले ही कोई उपकार करेंगे ?

गुरु :- [ खड़े होकर ] अच्छा बच्चो ! आज का पाठ समाप्
हुआ। तुम अब अपने घरों को जा सकते हो।



सुय्या

[ सभी विद्यार्थी उठते हैं और जाने लगते हैं। सुय्या चन्द्रकान्ता के हाथ में हाथ डालकर जाने लगता है परन्तु पंडित उसके कांधे पर हाथ रखकर उसे रोकता है । चन्द्रकान्ता भी रुक जाती है। जब उन्हें छोड़ बाकी बालक चले जाते हैं तो पंडित सुय्या के सामने आकर बड़ी गम्भीरता से उसके मुंह की ओर देखता है। सुय्या अपना सिर झुका लेता है जैसे उसे पंडित की आंखों से डर लग रहा हो ]

गुरु :- सुय्या !

सुय्या :- गुरुदेव !

गुरु :- यह कौन सा रूप है ? यह कौनसा छल है ?

सुय्या :- गुरुदेव ! काहे का रूप और कैसा छल ? आप क्या कह रहे हैं ? आपका यह कथन मेरी कुछ समझ में आया नहीं गुरुदेव ।

गुरु :- [ मंच पर एक दो कदम इधर-उधर चल कर ] यह नगर यूं ही सदा के लिए उजाड़ नहीं रहेगा ! यहां रोज-रोज बाढ़ नहीं आयेगी। यहां के निवासी यूं ही बाढ़ की भेंट नहीं चढ़ते रहेंगे। वह युग आ चुका है जिस में देवता आकाश से धरती पर उतरकर पापों का विनाश करते हैं। मनुष्य का रूप धारण करके जगत् का कल्याण करते हैं। [ एक दम सुय्या की ओर मुड़ कर ] सुय्या ! तुम जानते हो ? तुम जानकार हो परन्तु अनजान बनते हो। सुय्या ! सुय्या यह कौन सा रूप



सुय्या

है ? कौनसा छल है तुम्हारा ?

सुय्या : - गुरुदेव ! अभी वह आवाज़ नहीं आई ।

गुरु :- फिर कब होगी वह आकाशवाणी ?

सुय्या :- जाने कब गुरुदेव ! जाने कब ! ! परन्तु गुरुदेव...मुझ बालक की बात कौन मानेगा ?

गुरु :- मैं सारे जगत से मनवा लूंगा । मैं सारे संसार में ढिढोरा पीटूंगा कि कल्याणकारी सुय्या... ।

सुय्या :- [ उसे चुप कराने के अंदाज़ में ] गुरुदेव ! [थोड़ा सम्भलकर] बस कीजिए गुरुदेव ! भेद न खोलिए ! !

गुरु :- [ स्मित के साथ ] सुय्या तुम्हारे पास ज्ञान है ।

सुय्या :- हाँ गुरुदेव ! ज्ञान है मेरे पास । जानता हूं कि इस संसार में क्यों आया हूं यह भी जानता हूं कि क्या करने आया हूं । परन्तु गुरुदेव ! अभी वह समय नहीं आया । अभी बहुत देर लगेगी । जाने कितनी देर लगेगी अभी गुरुदेव !

गुरु :- सुय्या ! मैं जानता हूं कि तुम ही वह भगवान्, कल्याणकारी, सब का भला करने वाले अन्नपति हो । परन्तु सुय्या...फिर कब ...फिर कब ?

सुय्या :- [ तेज में आकर ] जब वह समय आयेगा—आप भी

जान जायेंगे और मैं भी। [ फिर एक बार बालक बन कर अपने में लौटते हुए ] गुरुदेव ! जाने की आज्ञा दीजिए। माता जी मेरी प्रतीक्षा कर रही होंगी !

[सुय्या और चन्द्रकान्ता पंडित को नमस्कार करते हैं। पंडित दोनों को शीष झुकाकर नमस्कार करता है जैसे कोई महान पुरुष उसके सामने हो और इसके साथ ही वह विंग से निकल जाता है। सुय्या भी जाने लगता है पर चन्द्रकान्ता उसकी बाँह पकड़कर उसे रोक लेती है। ]

सुय्या :- [ रुक कर ] क्यों चन्द्रा तू ने कुछ सुना तो नहीं।

चन्द्रा :- नहीं, नहीं...कहां सुनती...मैं तो बहरी हूं न ?

सुय्या :- मारे गए तब तो......

चन्द्रा :- यह गुरुदेव क्या कह रहे थे तुझ से ?

सुय्या :- मैं क्या जानूं ?

चन्द्रा :- देख भोला न बन।

सुय्या :- नहीं तो। इन पंडितों को तो ज्यादा बातें करने की आदत होती है।

चन्द्रा :- हाँ, हाँ ! तभी तो तू भी हाँ में हाँ मिलाए जा रहा था।

सुय्या :- और क्या करता...गुरुदेव जो ठहरे।

चन्द्रा :- [ रूठने का अन्दाज ] जा ! मैं तेरे साथ नहीं बोलती।

सुय्या :- क्यों ? मैं ने क्या किया है ?

चन्द्रा :- जा रे...आज से मेरे साथ पाठशाला नहीं जाया करना और न ही मेरे साथ खेलना...समझा ?

सुय्या :- [ हंसकर ] खेल-कूद के दिनों का अंत भी हो जायेगा चन्द्रा ।

चन्द्रा :- होने दे ।

सुय्या :- फिर याद करेगी । तू भी और मैं भी ।

चन्द्रा :- फिर वही बे-सिर-पैर की बातें करने लगा तू ? मेरी समझ में तो तेरी एक भी बात नहीं आती ।

सुय्या :- बड़ी हो जायेगी तो अपने आप समझ जायेगी ।

चन्द्रा :- [ हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाती है ] अरे... यह क्या कह रहा है ? कहता है जब बड़ी हो जायेगी...जैसे यह मुझ से बड़ा है । अगर होता तो इसने ज्यादा किताबें पढ़ी होतीं, शास्त्र रट लिए होते । कितना बुद्धू है यह सुय्या ।

[ फिर ज़ोर-ज़ोर से हंसती है ]

सुय्या :- [ स्मिति के साथ ] अच्छा बाबा तू ही बड़ी और मैं...इत्ता छोटा—बस ?

चन्द्रा :- हाँ अब ठीक है, चल अब घर चलते हैं ।

सुय्या :- अच्छा तू घर चली जा मैं स्नान करने जाता हूं । वह

मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी न ?

चन्द्रा :- [ अचरज से ] कौन प्रतीक्षा कर रही होगी ?

सुय्या :- वितस्ता ! और कौन ?

चन्द्रा :- अरे बुद्धू वितस्ता किसी की प्रतीक्षा करती है क्या ?

सुय्या :- किसी की करे न करे, मेरी तो करती ही रहती है ।

चन्द्रा :- पर क्यों ?

सुय्या :- किसी दिन बता दूंगा । आज नहीं ! आज मुझे इस में नहाना है, तैरना है । इस के तल पर पैठ कर इससे पूछना है...

चन्द्रा :- क्या पूछना है ?

सुय्या :- [ अपने में आकर ] किस से क्या पूछना है री ?

चन्द्रा :- अरे ! तू ही तो कह रहा था—वितस्ता से पूछना है ?

सुय्या :- [ अचम्भित होकर ] यह मैंने कब कहा ?

चन्द्रा :- अरे वाह ! अब झूठ बोलने पर भी उतर आया रे ! आने दे, कल गुरुदेव से कहकर तेरे कान खिंचवाऊंगी ।

सुय्या :- [ हंसकर ] तू कल की कह रही है । मैं आज ही और इसी समय तेरे कान खींच लूंगा !

चन्द्रा :- अरे जा ! बड़ा आया कहीं का !

सुय्या :- [ हंसते-हंसते उसका कान पकड़कर ] यह देख ! खींच लूं अब ?

चन्द्रा :- [ हंसती भी है और यूं ही रोती भी है ] सुय्या ! मेरा कान छोड़ दे। कट जायेगा। छोड़ दे........नहीं तो चिल्लाऊंगी...

सुय्या :- चिल्ला !

चन्द्रा :- [ रुंधे हुए स्वर में ] आँ...आँ...आँ [चिल्लाकर] माता जी !

सुय्या :- [ घबराकर कान छोड़ता है ] चन्द्रा, क्या हो गया तुझे ? खेल—खेल में ही चिढ़ जाती है तू ? त्राहि, त्राहि ! चल अब चलते हैं......चल री !

चन्द्रा :- जा, मैं नहीं जाती तेरे साथ।

सुय्या :- न आ। मैं तो चला नहाने। मां से कहना—मैं अभी आ जाऊंगा। वह चिन्तित न हों।

चन्द्रा :- जा, जाकर आप ही कह दे। मैं तेरी दासी हूं क्या ?

[ जाने लगती है ]

सुय्या :- चन्द्रा ! देख री ! कह देगी न ?

चन्द्रा :- फिर मेरा कान क्यों खींचा तुमने ?

सुय्या :- अरी कल मेरे साथ तेरा विवाह होगा, मैं तुझे पीटा भी करूंगा, हां।

चन्द्रा :- क्या सच ही तू मुझे पीटा करेगा रे ?

सुय्या :- हूं...और नहीं तो क्या ?

चन्द्रा :- तेरा मन कैसे करेगा रे ?

सुय्या :- हाँ ! मन तो नहीं करेगा। पर तू मुझे यूं ही चिढ़ाया करेगी तो इसके सिवा कोई उपाये भी न होगा !

[ चन्द्रकान्ता जोर–जोर से हंसती है और मुंह बना कर चली जाती है। सुय्या बड़े प्रेम से उसकी ओर देखता है और इसके बाद जाने किस चिन्ता में डूब जाता है। झरने का शोर उभरता है। सुय्या व्याकुल होकर पुस्तक और तख्ती नीचे फैंक देता है ]

सुय्या :- चन्द्रा ! तेरी यह हंसी, यह मुस्कान बहुत देर तक नहीं रहेगी। तेरा यह प्रेम मुझे पांव तले रौंद कर जाना होगा। मैं ऐसा करने के लिए विवश हूं। मेरे हाथ में कुछ भी नहीं है [ तेज में आकर ] यह प्रभु की इच्छा है। जो वह उचित समझेंगे, वही होगा। पर तू घबराना नहीं। अभी वह समय नहीं आया। मुझे वितस्ता को अपने वश में करना होगा। इस देश को संवारना, सजाना होगा। सुख और शान्ति की बेला जगानी होगी। जानता हूं, सारे संसार का भला करने वाला सुय्या स्वयं सदा व्याकुल रहेगा और एक लम्बी अवधि तक उसका हृदय यूंही रोता रहेगा। परन्तु मेरे

हाथ में है ही क्या ? करने वाले तो स्वयं भगवान् हैं जो वह ठीक समझेंगे, उसे कौन टाल सकता है ?

[ प्रकाश धीरे—धीरे धीमा पड़ता जाता है और कुछ क्षणों में मंच पर पूर्ण अंधकार फैल जाता है इस के पश्चात फिर प्रकाश फैल जाता है । मंच के बीच वाला पर्दा गिरा हुआ है और मंच के अगले हिस्से में सूत्रधार खड़ा होकर एक विंग की ओर देख रहा है । वह हंसता ही चला जा रहा है । दर्शकों की ओर उसके मुंह का केवल पार्श्व भाग (प्रोफाइल) ही है ]

सूत्रधार :- हूं ! कल का बालक, दूध पीता बच्चा और ऐसी बातें ? भगवान की सौगंध ऐसी बातें तो बड़े-बड़े विद्वानों को भी करना नहीं आतीं । हूं ! कहता है वितस्ता को वश में कर लूंगा, इस देश को बनाऊंगा, संवारूंगा, सुख और शान्ति की बेला जगाऊंगा । अरे जा-जा, माँ प्रतीक्षा में होगी । जा...भात खा...पाठ कर । अरे बुद्धू यहां तो बड़े-बड़े नरेशों से भी वितस्ता वश में नहीं की जा सकी, तू क्या करेगा इसे ? यह हमारे महाराज अवन्तिवर्मण रहे, वह बेचारे तक तंग आ चुके हैं । तेरी तो बात ही नहीं......।

[ यह कहकर उसी विंग से निकल जाता है जिसकी ओर वह बराबर देखे जा रहा था । उसके प्रस्थान के साथ ही बीच का पर्दा उठता है और एक मकान का आंगन नजर आता है । आंगन साफ-सुथरा है । चंडालिनी तथा एक और

स्त्री आंगन में बैठी हुई सब्जी काट रही हैं। सुय्या प्रवेश करता है और दोनों को नमस्कार करता है ]

डालिनी :- रूम ऋषी ★ जैसी आयु हो तेरी !

य्या :- [ पुस्तक और तख्ती एक ओर रखकर मां को गले लगाने के अंदाज़ में ] मां !

डालिनी :- [ उसकी ओर देखे बिना ही ] क्या है ?

य्या :- मेरी ओर देखो माँ।

डालिनी :- लगा फिर से गले लगाने और प्यार करने ? कितनी बार कहा यह न किया कर।

य्या :- क्यों न करूं माँ ?

डालिनी :- पछतायेगा कभी।

य्या :- क्यों माँ ?

डालिनी :- जाने किस दिन मुझे छोड़कर भाग जायेगा ?

य्या :- ऐसा कभी होगा माँ ? और फिर कहीं जाना भी हो तो तुम्हारी आज्ञा के बिना कभी नहीं जाऊंगा। तुम मेरी माँ हो न !

डालिनी :- हाँ, हाँ ! क्या कहने तेरे। तब तो तू केवल मेरा ही दूध पीता रे [ पास बैठी स्त्री की ओर संकेत करके ] इसका दूध तो नहीं पीता ?

★कश्मीर में प्रचलित विश्वास के अनुसार एक ऐसा ऋषी जो सदैव अमर है।

सुय्या

सुय्या :- तो अभी क्या हुआ मां। तुम कहो तो मैं इस सम
तुम्हारा दूध पी लूंगा !

चंडालिनी :- [ हंसकर ] हट रे ! लाज भी नहीं आती तुझे

सुय्या :- और क्या। तुम ही तो प्रतिदिन कहती हो और स्वयं ही लज्जा जाती हो। तुम ही बताओ अब मैं करूं ?

चंडालिनी :- करना क्या है। पढ़ लिखकर विद्वान बनना है इस नगर के सभी छोटे-बड़ों को पढ़ा कर बनाना है।

सुय्या :- [ चंडालिनी से कुछ दूर होकर ] माँ ! काश ! मुझे कुछ करना होता।

चंडालिनी :- [ सुय्या की इस बात से हैरान होकर ] सुय्या !

सुय्या :- [ फिर से बच्चा बनकर ] माँ यह चन्द्रा मेरा भेद देगी !

चंडालिनी :- [ स्त्री की ओर डरते-डरते देखकर ] सुय्या ! चुप बे ! कैसा भेद ? मैंने तुझ से एक बार कह जो कि ऐसी उल्टी-सीधी बातें मुझ से न किया भगवान के लिए मेरे साथ सीधी बातें किया कर। तो हृदय डूबने लगता है। सोचता हूं हो न हो तू छोड़कर चला जायेगा !

सुय्या :- [ उसके पास आकर उसके मुख को दोनों हाथों में ले लेता ऐसा भला कभी होगा माँ ?

[ ऐसे में चन्द्राकान्ता प्रवेश करती है और शोर मचाती है ]

द्रा :- मां का लाड़ला...मां का लाड़ला ! कल ही गुरुदेव से कह दूंगी ! हाँ।

या :- [ चन्द्रा के पास आकर ] क्या कह देगी ?

द्रा :- कह दूंगी सूय्या मां को चूम रहा था

या :- चलो यही सही। तो फिर क्या हुआ री ?

रा :- सब बालक तुझे चिढ़ायेंगे। मां का लाड़ला...मां का लाड़ला !

लिनी :- [ चन्द्रकान्ता के पास आकर ] अरी चन्द्रा ! तेरे पिता तुझे कभी चूमते और गले नहीं लगाते ?

द्रा :- हाँ, हाँ ! क्यों नहीं। पर मैं तो छोटी हूं और सुय्या इतना बड़ा है !

ालिनी :- तो यह बड़ा है ?

रा :- और क्या ! यही तो कह रहा था कि मैं बड़ा हूं...इत्ता बड़ा ! [ गालों में हवा भरके और बाहें गोल करके सुय्या के बड़े और मोटे होने का अभिनय करती है। सभी हंसते हैं। ] सुय्या कह दूं माता जी से कि गुरुदेव क्या कह रहे थे तुझसे ?

ता :- [ घबराकर ] मां ! देख रही हो मां ! मुझे कैसे सताती है ?

सुया

चन्द्रा :- अरे वाह ! सत्य बोलना कोई सताना होता है।
जी गुरुदेव इस से कह रहे थे......

सुय्या :- [ चन्द्रा की बात काट कर ] चन्द्रा ! चुप रह, चन्द्र

[ चन्द्रकान्ता कभी चंडालिनी की ओर तथा कभी की ओर देखती है। स्त्री सब्जी छीलने में मग्न है। चंडा चन्द्रकान्ता के सामने आती है तथा कुछ क्रोध और कु के साथ उससे पूछती है ]

चंडालिनी :- चन्द्रा, क्या कह रहा था पंडित ?

चन्द्रा :- [ डर कर ] नहीं माँ, सुय्या मुझे पीटेगा।

चंडालिनी :- [ गरजकर ] तू उसे जाने दे। कह दे कि वह
क्या कह रहा था इससे......कह दे।

[ सुय्या अब अपना शीष झुकाकर एक ओर ख जाता है। चन्द्रकान्ता यह देखकर कुछ निराश सी तथा उदास सी चंडालिनी से कह देती है ]

चन्द्रा :- कह रहे थे कि तू ही वह कल्याणकारी, सब का
करने वाला है।

चंडालिनी :- और ?

चन्द्रा :- और जाने क्या अन्नपति, अन्नपति कह रहे थे !

चंडालिनी :- [ तेज आवाज़ में ] बक रहा था वह पंडित। उसे
से आकाशवाणी हुई ? यूंही इसका दिमाग खरा

देगा। यदि यह ऐसी ही बातें करता रहा तो मैं इसे पाठशाला नहीं जाने दूंगी ! हाँ !

सुय्या :- [ सहज होकर ] माँ, मैं नहाने के लिए जाऊं ?

चंडालिनी :- नहीं, नहीं ! आज नहीं नहाओगे तो क्या हो जायेगा ?

चन्द्रा :- क्यों न होगा माता जी। इस की वह प्रतीक्षा कर रही होगी न !

सुय्या :- चन्द्रा ! भगवान के लिए चुप भी हो जाओ।

चंडालिनी :- [ शंकाग्रस्त होकर ] कौन प्रतीक्षा कर रही होगी रे ? यह कैसा पागलपन है। मेरी समझ में नहीं आता कि तुझे करना क्या है ? कौन प्रतीक्षा कर रही है तेरी ? बोलता क्यों नहीं है रे ?

चन्द्रा :- वितस्ता इस की प्रतीक्षा कर रही होगी, वितस्ता !

चंडालिनी :- क्या कहा ? वितस्ता ? सुय्या !

सुय्या :- [ सहम कर ] माँ...

चंडालिनी :- सुय्या, यदि तुझे यही बावलापन करना है तो फिर भगवान ने तुझे मेरे घर क्यों भेजा। किसी और के घर चला जाता ?

सुय्या :- मां ! भगवान ने तुझे ही इसके योग्य जाना था।

चंडालिनी :- [ चौंक कर ] क्या कहा ?

सुय्या :- [अपने आप में आकर] माँ ! अब मैं नहाने जाता हूं।

चंडालिनी :- नहीं, नहीं, नहीं ! कहीं कुछ हो गया तो ?

सुय्या :- कुछ नहीं होगा मां। तुम डरो नहीं। मैं तो किना पर ही नहाऊंगा !

चंडालिनी :- ना, ना ! मैं जानती हूं तू नदी में तैरने निकलेगा।

सुय्या :- फिर क्या हुआ माँ। एक किनारे से नदी में उतर क दूसरे किनारे से बाहर आऊंगा। मैं थोड़े उस डरता हूं।

चंडालिनी :- नहीं, नहीं तू क्यों डरने लगा। डरती तो वही तुझसे।

चन्द्रा :- माता जी सुय्या कह रहा था कि वितस्ता के तल में पै कर उससे पूछूंगा कि क्या यह उचित है ?

स्त्री :- [शीष झुकाये हुए ही] अरी ओ चन्द्रकान्ता ! तू ब शरीर है। अपनी माता को भी ऐसे ही सताती होगी चुप भी रह ! यहां आ और सब्जी छीलने में मेरी सहायता कर।

[चन्द्रकान्ता दौड़कर उस के पास जाती है और सब्ज छीलने लगती है। चंडालिनी सुय्या के पास जाकर उसे बाह से पकड़कर अपनी ओर घुमा लेती है।]

चंडालिनी :- सुय्या ! तुझे जो कुछ भी करना हो मुझे पहले ही कह देना। कहीं ऐसा न हो कि आगे चलकर हम दो में कोई पछताये, व्याकुल हो कर तड़प उठे।

सुय्या :- क्या करना है मुझे ? तुम ही तो कह रही थीं, मुझे पढ़ लिखकर विद्वान बनना है और इस नगर के सभी छोटे–बड़ों को विद्वान बनाना है।

चंडालिनी :- मैंने तो यही कहा था पर तुने उसके उत्तर में कहा था कि काश ! मुझे केवल इतना ही करना होता। देख सुय्या ! मैं तेरी माँ हूं। मैं तेरे मार्ग की बाधा नहीं बनना चाहती परन्तु जो करना है, वह मुझ से पहले ही कहके रख !

सुय्या :- माँ ! तो कह दूं क्या करना है मुझे ?

चंडालिनी :- [ कोई बड़ी ही असाधारण बात सुनने की उत्कंठा में ] कह दे !

सुय्या :- मुझे स्नान करना है माँ !

[ यह कह कर दौड़ता हुआ निकल जाता है। चंडालिनी खड़ी की खड़ी रह जाती है। इस के पश्चात उसके चेहरे पर एक तेज सा उभरता है और वह स्वयं अपने से ही कहती है ]

चंडालिनी :- मैं तो जानती ही हूं कि तू दूसरे बालकों के समान नहीं है। इस संसार के बन्धन तुझे कभी रोक न सकेंगे। तू तो वितस्ता का बहता हुआ पानी है। तुझे

कौन रोक सकता है ? परन्तु तू जब तक मेरे पास तब तक यह पागलपन मत कर। ठीक से चल-फिर कहीं तुझे किसी की नज़र न लग जाए।

[ चन्द्रकान्ता और स्त्री सब्जी चुन कर अन्दर जाती हैं। मंच पर धीरे-धीरे अन्धेरा छा जाता है। क्षणों बाद उजाला फैलता है और एक साधारण सा सामने आता है वेद के पेड़ों के तनों के पास युवक सुय्या नवयौवना चन्द्रकान्ता बैठे हैं। सुय्या का सिर झुका हुआ और चन्द्रकान्ता प्रेमभरे नयनों से उसे निहार रही है ]

चन्द्रा :- किन विचारों में खोये हुए हो ?

सुय्या :- [ खड़े होकर ] कुछ नहीं......किन विचारों में जाऊंगा ?

चन्द्रा :- क्या कहते हैं ? विचारों में डूबे हुए हैं और कहते कि कुछ नहीं।

सुय्या :- चन्द्रा, मैं तुम्हारी माता के विषय में सोच रहा था

चन्द्रा :- [ एकदम खड़ी होकर ] नाथ !

सुय्या :- हां चन्द्रा ! बाढ़ न आती तो तुम्हारा मायका जलदेव की भेंट न चढ़ जाता, तुम्हारी माता डूब जाती, तुम्हारा गाँव यूं उजड़ न जाता चन्द्रा। संसार के बन्धन मुझे जकड़े हुए न होते तो मैं...मैं...

चन्द्रा :- इस का क्या उपाय हो सकता है, कोई कर ही क्या सकता है। बाढ़ आती ही रहती है। कोई कुछ भी नहीं कर पाता। सब कुछ पानी की भेंट चढ़ जाता है और लोग अपनी जान बचाने के लिए भाग उठते हैं... इस का क्या हो सकता है? यह तो भगवान की इच्छा है।

सुय्या :- यदि यह उस की इच्छा है तो उसे भगवान क्यों कहते हैं ?

चन्द्रा :- तो फिर यह है क्या ? इस का कोई उपाय नहीं, कोई राह नहीं ?

सुय्या :- उपाय क्यों नहीं है, राह क्यों नहीं है...परन्तु।

चन्द्रा :- परन्तु क्या ?

सुय्या :- जब तक वितस्ता के मुंह में लगाम न दी जाये कुछ नहीं हो सकता !

चन्द्रा :- ऐसा कौन होगा जो यह कर पायेगा ? कोई ऐसा मनुष्य जन्म ले चुका है आज तक ?

सुय्या :- [ चन्द्रकान्ता को प्रेमभरी दृष्टि से निहारकर ] जन्म ले चुका तो था। परन्तु इस यौवन का क्या होगा, तुम्हारे इस प्रेम का क्या होगा ? [ उस से दूर हटकर ] मां की ममता का क्या होगा ? [ फिर उस के समीप आकर बड़ी

व्याकुलता के साथ ] चन्द्रा यदि मैं अकेला होता तो
यह कार्य कर लेता !

चन्द्रा :- तुम ? तुम ?

सुय्या :- हाँ ! मैं !! मैं यह कार्य कर लेता ! मेरे पास ज्ञान
है !

चन्द्रा :- [ भयभीत होकर ] फिर क्या सोच रहे हो ?

सुय्या :- केवल इतना कि घर से निकल पड़ूं तो तेरे यौबन का
क्या होगा, माँ के बुढ़ापे का क्या होगा ?

चन्द्रा :- सुय्या !

सुय्या :- [ उसकी ठोढ़ी को छूकर ] डरो नहीं चन्द्रा। मैं नहीं
जाऊंगा।

चन्द्रा :- तुम जाओगे ? मुझे किस के सहारे छोड़कर जाओगे ?
तुम्हें छोड़कर मेरा इस भरे संसार में और है ही कौन ?

[ चन्द्रकान्ता के इस कथन के बीच ही चंडालिनी एक
विंग से प्रवेश करती है। वह अब बूढ़ी हो चली है पर अधिक
नहीं। अधेड़ दिखाई देती है। वह चन्द्रकान्ता और सुय्या को
अनुभव कराए बिना ही कहती है ]

चंडालिनी :- अरे वह गुरु तुझे ढूंढ रहा था, सुय्या। तुम लोग
यहां क्या कर रहे हो ? घर नहीं है क्या ?

सुय्या :- [ दौड़कर उसके निकट जाता है ] माँ ! कहां गए गुरुदेव ?

चंडालिनी :- तू घर पर था नहीं, वे उल्टे पांव वापिस चले गए। [ चन्द्रकान्ता से ] चन्द्रा, क्यों बेटी आज घर में चूल्हा नहीं जलेगा क्या ?

चन्द्रा :- यह लो माँ, मैं चल दी !

[ प्रस्थान ]

चंडालिनी :- सुय्या !

सुय्या :- क्या है माँ ?

चंडालिनी :- यह क्या पागलपन है तेरा !

सुय्या :- कैसा पागलपन माँ ?

चंडालिनी :- और नहीं तो क्या ? सब ही विवाह के बन्धन में बन्ध जाते हैं परन्तु फिर इसके साथ ही चिपके नहीं रहते। पाठशाला से लौटा न लौटा भाग कर यहां आ जाता है। और इस पर इस बेचारी चन्द्रा को भी मजबूर करता है।

सुय्या :- [ लज्जित होकर ] मैंने कहां मजबूर किया माँ ? यह तो अपने आप ही चली आयी।

चंडालिनी :- देख रे प्रेम, प्यार तो अपनी जगह ठीक है परन्तु लोगों का भी कुछ ध्यान रखना चाहिए वह बातें न बनाएं।

तू पाठशाला में उनके बालकों को पढ़ाता है, तुझे ऐसी
बातों से दूर ही रहना चाहिए अब...।

सुय्या :- पर मैंने क्या किया मां ?

चंडालिनी :- कुछ नहीं। मगर फिर भी अपना चरित्र और चलन
फिरना ऐसा बना कि लोग तेरे नाम पर बट्टा न
लगाएं। देख, तू कोई ऐसा वैसा तो है नहीं। तू
सुय्या है सुय्या ! समझा ?

सुय्या :- [ चकित होकर ] माँ !

चंडालिनी :- तुझे बहुत से कार्य करने हैं, इस बात को कभी भी मन
से न भुलाना।

सुय्या :- [ पहले की तरह ] म...म...मां !

चंडालिनी :- हाँ, हाँ ! तू ही तो कहा करता था कि तेरे पास ज्ञान
है, है ना ?

सुय्या :- [ अब की बार समझकर ] हाँ मां, ज्ञान तो है पर उसके
होने पर भी क्या कर सकता हूं ? मैं तो सोचता हूं कि
कहीं यह सब कुछ भगवान की इच्छा ही न हो जिसके
आगे किसी भी प्राणी की कुछ नहीं चलती। मैं तो
कभी-कभी इसी शंका में डूब जाता हूं कि हो न हो
मेरा ज्ञान भी केवल एक भ्रम ही है।

चंडालिनी :- यदि तू भी दूसरों की भांति सोचने लगा तो उनमें और
तुझमें क्या अंतर रहेगा ? यदि तुझे अपने ज्ञान के प्रति



सुय्या

शंका है तो तूने क्यों यूं ही मुझे भी भ्रम में डाल दिया था ?

सुय्या :- माँ !

चंडालिनी :- तो फिर तू चुप रहकर अपनी गृहस्थी क्यों नहीं चलाता रे ? क्यों नहीं भूल जाता कि तेरी मां ने तुझे विद्वान और सब का भला चाहने वाले के रूप में देखने की कामना की थी !

सुय्या :- यह क्या कह रही हो माँ ?

चंडालिनी :- सच ही कह रही हूं। यदि मैंने सचमुच ही बुरे कर्म किए हैं तो तू मेरी राह में क्यों आ गया था ? सुय्या, सुन ले, मैं आज तुझ पर अपने जीवन का एक भेद खोलना चाहती हूं ?

सुय्या :- भेद ? कौन सा भेद माँ ?

चंडालिनी :- चौंकना नहीं, जो मैं कह दूं ?

सुय्या :- [ चौंक कर ] क्या कहोगी माँ ?

चंडालिनी :- मैं...मैं...मैं......

सुय्या :- कह दो माँ......कह दो...!

चंडालिनी :- [ व्यंग्य से ] हूंह ! माँ...!

सुय्या :- [ पूर्णतयः स्तम्भित होकर ] माँ

चंडालिनी :- [ बड़ी गम्भीरता के साथ ] नहीं .. ..नहीं... ..मैं ते
माँ नहीं !

सुय्या :- [ बिखर कर ] तो......तो .....तो...?

चंडालिनी :- हाँ हाँ, यही वह भेद था !

सुय्या :- [ चीखकर उसको गले लगाता है ] माँ ! सब कुछ क
लो माँ, पर यह न कहो माँ...यह न कहो !

चंडालिनी :- सुय्या ! बावला न बन !

सुय्या :- माँ ! मुझ से यह चोट सही नहीं जायेगी । माँ–
कह दे कि तू मेरी माँ है और मैं तेरी सन्तान हूं । ते
कोख से मेरा जन्म हुआ है, तूने ही मुझे पाला पो
है। मैं तो केवल तुझे जानता हूं माँ। कह दे माँ
कह दे......!

चंडालिनी :- [ अपने से अलग करके ] काश ! यह सच होता !

सुय्या :- [ बड़े क्रोध के साथ उसके सामने जाकर ] यदि यह स
नहीं तो फिर सच क्या है मां ? तू क्यों मेरी परीक्षा
रही है मां ? मैंने क्या अपराध किया है, कौन सा प
किया है मैंने......मां ?

चंडालिनी :- पाप तो मैंने ही किए थे बेटे !

सुय्या :- माँ ! यदि तुझे मेरा और चन्द्रा का यह मिलन पस
न था तो फिर मुझे उसके विवाह–बन्धन में क्यों ब
दिया था ?

चंडालिनी :- मुंह को लगाम दे ! जाने क्या बक रहा है।

सुय्या :- और नहीं तो क्या ?

चंडालिनी :- सुय्या सत्य सत्य है। और सत्य यह है कि तू मेरी सन्तान नहीं।

सुय्या :- [ माथा पीटकर ] हे भगवान ! यह शब्द सुनने से पहले ही मैं मर क्यों नहीं गया !

चंडालिनी :- [ भयभीत होकर ] सुय्या ! [ उसके मुख पर हाथ रखकर ] क्या हो गया रे तुझे ? तुझे मेरी भी उम्र लग जाये। बड़ी पदवी प्राप्त करे, मान बढ़े तेरा, नाम हो तेरा !

सुय्या :- आग लगे ऐसी पदवी में, बिजली गिरे उस सम्मान पर जिसमें मुझे यह एहसास बार–बार घायल करता रहे कि तू मेरी माँ नहीं। [ आंसू पोंछकर तथा भावनाओं को वश में करके ] मां ! कभी–कभी सत्य बोलने और सुनने से बड़ा कष्ट होता है। परन्तु...मुझे वह सत्य बता दे, मैं उसे सुनना चाहता हूं। फिर चाहे मेरे हृदय पर छुरियां ही क्यों न चलें ?

चंडालिनी :- छुरी चले तेरे शत्रुओं पर......

सुय्या :- मुझे टाल मत माँ...कह दे माँ.. कहती क्यों नहीं ?

चंडालिनी :- सुय्या ! मेरे बच्चे...मेरे लाल ! मैं बांझ थी। मेरी कोख तब तक सुलगती हुई धूनी सी ही रही जब तक कि तू आया नहीं था।

सुय्या :- मैं कैसे आया, कहाँ से आया, यही कह दे माँ, य कह दे !

चंडालिनी :- मैंने तुझे रास्ते पर से उठा लिया ।

सुय्या :- रास्ते पर से ?

चंडालिनी :- हां ! कोई तुझे रास्ते पर छोड़कर चला गया था मैंने तुझे उठा लिया और यह बात फैला दी कि तू मे कोख से पैदा हुआ है ।

सुय्या :- रास्ते पर से ! मुझे कौन छोड़ के चला गया था माँ

चंडालिनी :- स्वयं भगवान......

सुय्या :- माँ !

चंडालिनी :- तेरी माँ तुझ पर बलिहारी मेरे बेटे ! यदि तू कि नारी की कोख से जन्म लेता तो इस संसार में आक क्या करता। इस संसार के रिश्ते-नाते बेड़ियां ब कर तुझे जकड़ लेते। तू भी दूसरों के समान ए साधारण व्यक्ति होता जो हर बात को भगवान क इच्छा मानकर चुप होकर बैठ जाता है और कुछ नहीं कर पाता ।

सुय्या :- माँ ! यह आज तू कैसी बातें कर रही है ?

चंडालिनी :- वैसी ही बातें जैसी तू बचपन में किया करता था औ जिन्हें तू अब भुलाना चाहता है !



सुय्य

सुय्या :- माँ !

चंडालिनी : हाँ, हाँ ! क्यों नहीं ! बेड़ियां जो पांव में पड़ गई हैं। तू इन बेड़ियों को काटने से डर रहा है। सुय्या तुझे घर का पिंजरा तोड़कर निकलना ही होगा, उड़ना ही होगा !

[ प्रस्थान करती है। सुय्या एक दो पग उसकी ओर बढ़ता है पर उसका रूप देखकर रुक जाता है तथा अपने सिर को दोनों हाथों में थाम कर इधर-उधर चलने लगता है ]

सुय्या :- हे भगवान ! यह मैंने क्या सुना ? मेरी माँ मेरी माँ नहीं। कहती है वह मेरे लिए एक बेड़ी है। यह मैं क्या सुन रहा हूं मेरे प्रभु। उसकी ममता, उसका प्यार एक जंजीर है, बेड़ी है। चन्द्रकान्ता का प्रेम भी बेड़ी है ? क्या मैं सचमुच इन बेड़ियों में जकड़ा हुआ हूं ? माँ कहती है, बेड़ियां काट फैंको, पिंजरा तोड़ कर बाहर आ जाओ। नहीं-नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं इन बन्धनों को तोड़ नहीं सकता, पिंजरा छोड़ कर उड़ नहीं सकता। मुझे यह बेड़ियां, यह पिंजरा बहुत प्रिय है। मैं इन्हें छोड़कर नहीं जा सकता। मेरे भगवान ! मेरे प्रभु...!

[ अपने मुख को दोनों हाथों में थाम कर पेड़ के तने के पास जाता है। पेड़ के सहारे सिर टिका कर सिसकने लगता है परन्तु सिसकने की आवाज नहीं आती, केवल शरीर की

सुय्या

थिरकन से सिसकने का भाव प्रकट होता है। इसी बीच दूर कहीं से नगाड़े की आवाज़ आती है। सुय्या धीरे-धीरे अपना सिर ऊपर उठाता है तथा सिसकना भूलकर भयभीत होकर नगाड़े की आवाज़ सुनता है।]

सुय्या :- [चिल्ला कर] यह अशुभ आवाज़ मुझे पागल बना देगी! यह नगाड़ा मुझे बावला बना देगा। मैं पागल हो जाऊंगा...पागल!

[नगाड़ा जोर, जोर से बजता है]

सुय्या :- [अपने कानों को हाथों से बन्द करके] बन्द करो इस अशुभ आवाज़ को। यह उजाड़पन और बरबादी की आवाज़ है। काल की आवाज़ है। मैं यह आवाज़ सुनना नहीं चाहता!

[आवाज़ रुक जाती है और सुय्या मंच के सामने वाले हिस्से में आता है। उस के मुख पर तेज झलक रहा है]

सुय्या :- मेरे पास ज्ञान है। इस ज्ञान से मैं इस आवाज़ को सदा के लिए बन्द कर दूंगा! मैं सारे संसार से पुकार-पुकार कर कहूंगा कि मेरे पास ज्ञान है। मैं वितस्ता को अपने वश में कर सकता हूं [चिल्ला कर] हाँ, हाँ, मेरे पास ज्ञान है! मैं जानता हूं, मैं वितस्ता को अपने वश में करके ही रहूंगा! मेरा ज्ञान [फिर निराश सा होकर] परन्तु मेरा हृदय यूं ही उजाड़ रहेगा



सुय्या

इसलिए कि इस भरे संसार में मेरा कोई भी अपना नहीं ! कोई भी नहीं !

[ यही कहते--कहते दाएं विंग से प्रस्थान करता है। उस के प्रस्थान के साथ ही धीरे–धीरे बीच का पर्दा गिरता है। कुछ क्षण बीत जाने पर सूत्रधार बायें विंग से प्रवेश करता है। थोड़ा घूम कर एक स्थान पर रुक जाता है, सोचता है। तत्पश्चात मंच के सामने वाले हिस्से में आकर लोगों की ओर देखता है। बड़ा निराश सा होकर अपने सिर को हिलाता है जैसे शब्दों का प्रयोग किए विना ही उन्हें जताना चाहता हो कि तुम कुछ भी नहीं जानते ]

सूत्रधार :- च्, च्, च् ! ज्ञान स्वयं भगवान है। जिसके पास ज्ञान हो, वह स्वयं भगवान है। भगवान न सही, भगवान का रूप तो है। और यह पंडित सुय्या कह रहा है कि उसके पास ज्ञान है, ज्ञान ?

[ जोर से हंसता है। व्यंग्य से ]

ज्ञान ! हा, हा, हा ! अरे भाई ज्ञान कैसा ? यदि तुम्हारे पास ज्ञान है तो फिर चलने की तैयारी क्यों नहीं करते ? यह क्या हुआ कि तुम एक ऐसी माता के लिए व्याकुल हो रहे हो जिसकी कोख से तुमने जन्म भी नहीं लिया। एक ऐसी पत्नी के प्रेम में बावले हो रहे हो जिसकी माता पानी में डूब कर प्राण दे बैठी और फिर पत्नी जाने कब स्वयं भी पानी में डूब कर मर

जायेगी। चलो पानी में न डूबे अकाल में तो मर जायेगी ना ? [ जोर से हंसता है ] अरे बुद्धू, यदि तुम्हारे पास ज्ञान है तो फिर यह शंका किस लिए ? तब तो तुम्हें लंगर-लंगोट कसकर निकलना चाहिए। संसार की जंजीरें और पिंजरा तोड़कर जाना चाहिए और अपने वचन को पूरा करना चाहिए। [ व्यंग्य से ] परन्तु वह सब कहाँ ? तुम लोग देखते जाओ, पाठशाला पहुंच भी गया होगा और विद्यार्थियों को पढ़ा भी रहा होगा। वह पाठशाला और उसके विद्यार्थियों को ही सारे संसार से बढ़कर मानता है और कहता है कि यही कुछ उसके जीवन का ध्येय और आदर्श है [ घृणा से ] हूंह् !

[ यही कहते--कहते प्रस्थान करता है। बीच वाला पर्दा धीरे--धीरे उठता है। पाठशाला का दृश्य सामने आता है। सुय्या एक चौकी पर उकड़ूं बैठा हुआ है। सामने कुछ बालक हैं। सुय्या अपने आप में नहीं है। वह टकटकी बांधे न जाने क्या देख रहा है। उसके होंठ तो हिलते दिखाई देते हैं परन्तु वह मूक है। कुछ क्षण बाद वह चौकी से उठ खड़ा होता है और चिल्ला उठता है...]

सुय्या :- हे प्रभु !

[ बालक अचम्भित होकर कभी सुय्या को और कभी एक दूसरे को देखते रह जाते हैं। सुय्या को इस का भान नहीं है। वह मुट्ठियां भींचकर भाल ठोकने लगता है और मंच के अगले भाग में आ जाता है...]

सुय्या :- मेरे प्रभु ! मुझे रास्ता दिखा दे ! मैं अंधियारे में घिर गया हूं ! नहीं सूझता कि क्या करूं। प्रभु मुझे रास्ता दिखा दे नहीं तो मेरा इस संसार में आना व्यर्थ सिद्ध होगा। मैं जन्म—मरण के चक्कर से मुक्ति नहीं पा सकूंगा ! प्रभु...मुझे एक और जन्म लेने के लिए विवश न करो ! मुझे इस यंत्रणा से मुक्त कर दो प्रभु !

[ आंखों पर हाथ रखे बड़ी व्याकुलता के साथ खड़ा रहता है। छात्र और अधिक अचरज में पड़ जाते हैं। ऐसे में पंडित प्रवेश करता है। वह बूढ़ा हो गया है परन्तु उसका स्वास्थ्य ठीक ही है। वह संकेत से बालकों को वहां से हट जाने का आदेश देता है। बालक धीरे--धीरे प्रस्थान करते हैं। पंडित सुय्या के पास जाकर उस के कंधे पर हाथ रख देता है

सुय्या :- [ चौंक कर ] कौन ?

गुरु :- सुय्या !

सुय्या :- गुरुदेव ?

गुरु :- यह क्या पागलपन है सुय्या ?

सुय्या :- [ गुरु के चरण छूकर ] गुरुदेव मैं अंधेरे में घिर गया हूं। मुझे कुछ भी नहीं सूझता। मेरी सहायता कीजिए गुरुदेव ! मेरा हाथ थामिये गुरुदेव !

गुरु :- [उसे ऊपर उठा कर] सुय्या ! बेटे, ऐसी निराशा क्यों

सुय्या :- गुरुदेव मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आ रहा।

गुरु :- यह क्या कह रहे हो तुम सुय्या ? तुम्हारा रास्ता मुझे भी दिखाई दे रहा है।

सुय्या :- गुरुदेव ! क्या यह सत्य है कि मेरी माता मेरी सगी नहीं है ?

गुरु :- तुम्हारे लिए तो यह सारा जगत ही माता-समान है।

सुय्या :- तो मैंने किसी की भी कोख से जन्म नहीं लिया था

गुरु :- तुमने जिस किसी की भी कोख से जन्म लिया है, भूल जाओ। केवल अपने लक्ष्य और कर्त्तव्य को रखो ?

सुय्या :- क्या है मेरा लक्ष्य ? कौनसा है मेरा कर्त्तव्य ?

गुरु :- तुम्हारा लक्ष्य तो देवताओं का सा है। तुम स्वयं मनुष्य की काया में आए हुए एक देवता हो।

सुय्या :- [चिल्ला कर] गुरुदेव ! ऐसा न कहिए। मैं अहं में डूब जाऊंगा ! नहीं, नहीं मैं देवता नहीं, मनुष्य केवल एक मनुष्य !

गुरु :- तुम्हें इस देश का कल्याण करना है।

सुय्या :- वह एक मनुष्य भी कर सकता है गुरदेव ?

गुरु :- तो फिर देर काहे की सुय्या ?

सुय्या :- गुरुदेव, यह सब तो मेरी समझ में नहीं आता। हाँ एक बात अवश्य जानता हूं...

गुरु :- वह क्या ?

सुय्या :- यही कि आवाज़ आ गई। अब मैं पीछे नहीं हट सकता।

गुरु :- ईश्वर तुम्हें सफल करें! हम तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहें हैं।

सुय्या :- [ हंसने और रोने के बीच की अवस्था में ] माँ कहती हैं, इस संसार के बंधन तोड़कर निकल जा, पिंजरा तोड़ कर उड़ जा !"

गुरु :- वह जानती हैं कि तुम्हें क्या कुछ करना है। तुम्हारा बचपन शुद्ध और पवित्र था। उसी लड़कपन में तुमने अपने जीवन का सबसे बड़ा भेद बता दिया था। वह भेद जो तुम्हारे जीवन का सबसे बड़ा सत्य है। तुम्हारी माँ बड़ी भाग्यवान हैं। वह तुम्हारे उसी सत्य को प्रत्यक्ष करने के लिए यह सब कुछ कर रही हैं, सब कुछ सह रही हैं!

सुय्या :- परन्तु चन्द्रा, मेरी पत्नी ?

गुरु :- कोई भी पत्नी यह नहीं चाहेगी कि उसका पति कल्याणकारी न बन पाए।

सुय्या :- चन्द्रा का प्रेम, उस का मोह...इन सब का क्या हो

गुरु :- तुम जब तक सफल होकर लौटोगे, वह तुम्हारी प्र करेगी उसी प्रेम और मोह के साथ तेरा रास्ता देखे

सुय्या :- मेरे यह केश तब तक सफेद हो जायेंगे ?

गुरु :- प्रेम बूढ़ा नहीं होता, प्रेम सदा के लिए प्रेम रहता है। सुय्या अपने हृदय से शंका को निका और जाने की तैयारी करो !

सुय्या :- तैयारी ? [ अपने आप से ] तैयारी ? उड़ने की तै बेड़ियां तोड़ने की तैयारी !

गुरु :- तुम चले जाओ सुय्या, मैं महाराज को सूचित कर यह बहुत आवश्यक है। कल तुम्हें महाराज सहायता की आवश्यकता होगी !

सुय्या :- महाराज की आवश्यकता [ अपने आप से ] पि तोड़ना !

गुरु :- सुय्या !

सुय्या :- [ सचेत होकर ] हाँ गुरुदेव ?

गुरु :- तुम तो जानते ही हो कि तुम्हें क्या करना है ?

सुय्या :- हाँ जानता हूं गुरुदेव। मुझे एक महान यात्रा पर ज है। वितस्ता के स्रोत से लेकर उस स्थान तक जा

जहां यह महा पद्मासर ★में मिल जाती है फिर उस से निकल कर पहाड़ों और ढलानों से संग्राम करती हुई नीचे ही नीचे बहे जाती है। मैं पहले वितस्ता का स्रोत देखने जाऊंगा !

गुरु :- भगवान तुम्हारे साथ होंगे ! वही तुम्हें सफल करेंगे। तुम जाने की तैयारी करो ! मां से आज्ञा लो !

सुय्या :- आपकी आज्ञा का पालन होगा गुरुदेव !

[ गुरु प्रस्थान करता है। सुय्या उसे नमस्कार करता है। गुरु एक विंग से निकलता है और दूसरे विंग से तीन व्यक्ति प्रवेश करते हैं। यह तीनों सुय्या के पास आकर उसे यूं घूर-घूर कर देखते हैं जैसे उस की खिल्ली उड़ा रहे हों। ]

एक :- यही है क्या ?

दूसरा :- हाँ, यही है ! ठोक बजाकर देख लेना !

एक :- देख तो रहा हूं। अरे इसके क्या कहने। इसके तो सभी अंग अपने–अपने स्थान पर ठीक से बैठे हैं परन्तु केवल भेजा अपनी जगह से कुछ हिल गया है।

[ सुय्या निर्वाक, आश्चर्य से, उन्हें देखता रहता है ]

तीसरा :- मैं कहता हूं, यह हमारे बच्चों को पढ़ाता क्या होगा ? क्यों भई ?

---

★वुल्लर झील का प्राचीन नाम

एक :- क्या पढ़ाता होगा, यही पागलपन...और क्या ? इ बेचारे का तो दिमाग ही खराब हो चुका है, हमा बच्चों को क्या पढ़ायेगा।...खाक...?

दूसरा :- कहता है मैं वितस्ता नदी को एक चिड़िया के सम अपनी मुट्ठी में बन्द कर लूंगा !

तीसरा :- [ सुय्या के निकट जाकर ] क्यों भई ! क्या यह सच है ज़रा अपनी मुट्ठी खोल कर तो दिखाओ, देखें कितन बड़ी है और क्या वितस्ता इस में समा सकती है ?

[ तीनों अट्टहास करते हैं ]

एक :- यहां तो स्वयं राजा अवन्तिवर्मन भी परेशान हैं कि बाढ़ का क्या होगा और यह कह रहा है...[ अभिनेताओं की भांति ] हे राजन ! आप निश्चिन्त रहिये ! सेवक को आज्ञा दीजिये और देखिये कि आप का यह तुच्छ सेवक वितस्ता को किस प्रकार आप के चरणों में ला आता है ?

[ जोर–जोर से हंसता है ]

दूसरा :- [ सुय्या से ] पागल !

तीसरा :- [ सुय्या से ] बावला !

एक :- [ सुय्या से ] उल्टी खोपड़ी का !

[ तीनों खुल कर हंसते हैं। इसी बीच चंडालिनी और चन्द्रकान्ता प्रवेश करती हैं। चंडालिनी सुय्या के आगे खड़ी होकर...]

चंडालिनी :- अरे ओ हत्यारो ! कितने निर्दयी हो तुम ! दया भी नहीं आती तुम्हें इस पर ? क्या बिगाड़ा है इसने तुम्हारा ? रास्ते चलना कठिन बना दिया है इसका तुमने ?

एक :- लो भई, इसकी माता सहायता करने के लिए आ गई है !

दूसरा :- अरे, इसकी पत्नी को भी साथ ले आई है।

[ तीनों फिर अट्टहास करते हैं ]

चंडालिनी :- हे प्रभु। इन्हें बुद्धि दे और [ सुय्या की ओर संकेत करके ] इसे सहनशक्ति !

तीसरा :- अरे बहन, बुद्धि इस के लिए मांग नहीं तो यह इस नगर का सबसे बड़ा पागल बनने जा रहा है।

[ उन्मुक्त हंसी हंसता है ]

चंडालिनी :- [ सुय्या से ] चल रे, घर चल।...यूं टुकर-टुकर मुझे क्या देखता है रे ?



सुय्या

सुय्या :- माँ, इन्हें कुछ न कहो। इन्हें हंसने और खिल्ली उड़ाने दो। इन्हें कहने दो कि मैं पागल, बावला और सिरफिरा हूं। परन्तु मैं एक दिन इन्हें दिखा कर रहूंगा कि पागल कौन है। यह कि मैं ?

एक :- हाँ, हाँ, हम ही तो पागल ठहरे प्यारे। देखो अब कहीं पाठशाला में हमारे बच्चों को भी यही पाठ न पढ़ाना कि तुम वितस्ता को अपने वश में कर लोगे और यह कि भगवान की इच्छा के विरुद्ध एक मनुष्य भी संघर्ष कर सकता है।

सुय्या :- नहीं, यह भगवान की इच्छा नहीं है। यह उसकी इच्छा नहीं हो सकती कि हम आए दिन यूं ही बाढ़ का शिकार बनते रहें। यह हमारी मूर्खता है, और कुछ नहीं !

दूसरा :- नहीं, नहीं, यह हमारी मूर्खता नहीं। हो भी तो तुम्हारी ही होगी। [ दूसरों से ] अरे, भाइयो चलो। इस पगले के साथ व्यर्थ ही समय का नाश होगा।

[ प्रस्थान करते हैं ]

चंडालिनी :- चल रे, अब घर चल। यदि यह लोग अपनी हठ पर आ जायेंगे तो तुझे पीटेंगे।

सुय्या :- नहीं माँ, अब नहीं !

चंडालिनी :- क्या कह रहा है रे ? चन्द्रा, तू ही इसे समझा ना ?



सुय्या

चन्द्रा :- चलिये, घर चलते हैं।

सुय्या :- कौन सा घर, किस का घर? मैं अब वहां नहीं जा सकता। मैं पहले ही बहुत देर कर चुका हूं। अब ऐसा करना उचित नहीं होगा। अब नहीं!

चन्द्रा :- [रोते हुए] माता जी, यह क्या कह रहे हैं?

चंडालिनी :- [आकाश की ओर देख कर] मेरे भगवान! तुमने मेरी विनती स्वीकार कर ही ली!

चन्द्रा :- [अचरज से] माता जी!

सुय्या :- चन्द्रा, मां से क्या पूछ रही है, मेरी बात सुन, मैंने बेड़ियां तोड़ डालीं। अब मुझे कोई भी अपना बन्दी नहीं बना सकता। कोई भी नहीं...!

चन्द्रा :- मुझे किस के सहारे छोड़ जायेंगे?

सुय्या :- तू मेरी थी ही कब?

चन्द्रा :- फिर किसकी थी?

सुय्या :- उस सुय्या की, जिसकी अभी कुछ क्षण पहले मृत्यु हो गई।

चन्द्रा :- [चिल्ला कर] हे भगवान! यह मैं क्या सुन रही हूं?

सुय्या :- चन्द्रा, यदि तुझे मुझ से इतना ही प्यार है तो मेरी प्रतीक्षा कर ले।

चन्द्रा :- काहे की प्रतीक्षा ? आप कहां जा रहे हैं ?

चंडालिनी :- चन्द्रा, यह एक यात्रा पर जा रहा है, एक लम
यात्रा पर।

चन्द्रा :- कौन सी यात्रा ? मुझे साथ नहीं ले जाएंगे ?

चंडालिनी :- [ डर कर ] चन्द्रा, तुझे साथ ले जायेगा तो मु
किस के सहारे छोड़ कर जायेगा री ?

चन्द्रा :- माँ, तुम कैसी माँ हो। दो आत्माओं को अलग क
रही हो और एक आंसू भी नहीं बहातीं।

चंडालिनी :- बहुत दिन तक रोने धोने के पश्चात मुझे इस सत्य क
ज्ञान हुआ कि हम आज तक सुय्या की राह की रुकाव
बने रहे। आज से इसकी राह की रुकावट बनना इस
साथ अन्याय होगा।

चन्द्रा :- माँ !

चंडालिनी :- चन्द्रकान्ता, मैं ने पहले इसे ममता की बेड़ियों
जकड़ दिया। यह जानकर कि शायद यह ऐसे ही अप
पागलपन छोड़ दे। परन्तु इसका आचरण देख
पता चला कि मैंने उड़ते हुए पंछी को बंदी बना दिया
फिर मैं ने इसका विवाह रचाया। यह सोचकर
दूसरी बेड़ी पाओं में पड़ेगी...तुम्हारे प्रेम और म
की बेड़ी। मगर इस पर भी मैंने अनुभव किया

इसकी आत्मा व्याकुल ही रही। इसे सुख न मिला। न तो मेरी गोद में और न ही तुम्हारी बाहों में।

चन्द्रा :- माँ, मैं ने तुम से स्पष्ट बात कह दी है।

चंडालिनी :- चन्द्रा, इसके लिए क्षमा करना बेटी।

चन्द्रा :- माँ, कहना कठिन है, परन्तु जो कुछ तुम ने सोचा वह ठीक न था। तुम ने मुझे एक जजीर जाना परन्तु इनके मोह की जंजीर जाने किस जन्म से मेरे गले का हार बन चुकी है। माँ, मैं ने अपना सब कुछ इनके चरणों में न्योछावर कर दिया है। फिर तुम ही कह दो माँ, इनके चले जाने पर मैं किस आशा पर ज़िन्दा रहूंगी ?

सुय्या :- [ डांट कर ] माता जी ! चन्द्रकान्ता !

[ चंडालिनी और चन्द्रकान्ता सुय्या के क्रोध से डर कर सहम जाती हैं ]

मैं अब यह व्याख्यान सुनने के लिए तैयार नहीं हूं। यह भावनाएं हैं, केवल भावनाएं ! माया और ममता की भावनाएं। मुझे इन भावनाओं से ऊपर उठकर संसार को कुछ और भी देना है।

[ मंच के बीचोंबीच आकर बड़े क्रोध के साथ...]

सुय्या

नहीं तो मैं यहां क्या करने आया हूं ! नहीं तो
जन्म-मरण का चक्कर पूरा नहीं हुआ था क्या ?
लोग चले जाओ और मुझे जाने को अनुमति दो !

चंडालिनी :- नहीं, नहीं, यूं कोई थोड़े हो जाता है। मुहूर्त और
निकलवायेंगे। पूजा–पाठ करके निकल जाना।

सुय्या :- ऐसे कामों में मुहूर्त नहीं देखे जाते मां।

चन्द्रा :- ठीक है यदि आपने अपने मन में यही ठानी है,
जाइये। मगर पहले घर तो चलिये, फिर वहीं से
जाना।

सुय्या :- [ चन्द्रकांता के पास आकर ] चन्द्रा।

चन्द्रा :- स्वामी !

सुय्या :- चन्द्रा, अगर मैं घर चला गया तो घर की वह
मुझे जाने नहीं देंगी। उस घर का मोह, उस
का प्यार और उस घर के रहने वालों का प्रेम—
सब फिर जंजीर बन जायेंगे। वही जंजीरें !

चंडालिनी :- [ सुय्या की भावनाओं से सहम कर ] सुय्या ! अरे
तेरा होगा क्या ? इसे बुद्धूपन की बातें करने से रोक
है और खुद ऐसी बातें करता है कि पत्थर का
भी पिघल जाए। अच्छा यदि तू घर नहीं चल
चाहता, तो मत चल। मगर ज़रा रुक जा। हम
उलटे पांव वापिस आयेंगी। कुछ सामग्री तो

लेता जा। तेरी यात्रा बड़ी कठिन है। रास्ता बहुत लम्बा है। कौन जाने कितना समय लगेगा तुझे।

सुय्या :- भगवान जाने। पर माँ, समय बहुत लगेगा। सारी वितस्ता को खंगालना पड़ेगा। इसके आस पास के गांव देखने होंगे। नदी का उतार–चढ़ाव परखना होगा। हर एक चीज़ को आंकना होगा माँ, हर एक चीज़ को !

चंडालिनी :- ऐसा करते–करते कहीं चन्द्रा को भूल न जाना बेटा ?

सुय्या :- [ होंठों पर हंसी लाकर ] इतनी चतुर न बनो माँ ! तुम्हें वास्तव में कहना था कि ऐसा करते–करते माँ को न भूलना बेटे। है ना माँ ?

चंडालिनी :- [ हंसने और रोने के आस पास ] तेरी इसी योग्यता ने तो मुझे हमेशा भुलावे दिये। कभी सोचती रही कि बुद्धि-मान है तो फिर इसमें क्या है। फिर सोचा, नहीं, बच्चे इतने बुद्धिमान नहीं होते। और यदि होते भी हैं तो वह ऐसी बातें नहीं किया करते, जैसी कि तू अपने बचपन में किया करता था।

चन्द्रा :- उन्हीं बातों से इन्होंने मुझे भी अपने मोह में जकड़ लिया था।

सुय्या :- ओहो, लगीं फिर तुम वैसी बातें करने। भगवान के लिए मुझे एक बार फिर द्विविधा में न डालो। जाओ, चले जाओ और मुझे भी जाने दो !

चंडालिनी :- [ चन्द्रकान्ता के कंधे पर हाथ रख कर ] चल री चन्द्रा
हम घर जाकर शीघ्र ही लौट आते हैं।

[ चंडालिनी और चन्द्रा का प्रस्थान। सुय्या कुछ क्ष
उनकी ओर देखता रहता है और फिर प्रसन्नता से चिल्लाता है

सुय्या :- हे भगवान ! तो वह घड़ी आ ही गई। वह घड़ी जब मु
अपना कर्त्तव्य पूरा करने का अवसर मिलेगा। य
जन्म लेकर जो कार्य मुझे पूरा करना है, उसे करने क
अवसर। मैं इस नगर और इस देश को आबाद कर
गा। वितस्ता मेरी प्रतीक्षा कर रही है। वितस्ता क
स्रोत मेरी प्रतीक्षा कर रहा है, महापद्मासर मेरी रा
देख रहा है। हे भगवान, मुझे साहस दे, शक्ति दे कि
अपना कर्त्तव्य और अपना सपना पूरा करके दिखा दूं

[ हाथ जोड़, आंखें बंद करके और शीष झुका कर कि
अदृश्य शक्ति को नमस्कार करता है। कुछ क्षण इसी मुद्रा में ख
रहता है। इधर सूत्रधार प्रवेश करता है। सुय्या को देखक
विंग के पास ही खड़ा रह जाता है। सुय्या धीरे-धीरे सि
को ऊपर उठाता है। आंखें खोलकर सूत्रधार को देखता है
दोनों एक दूसरे की ओर टकटकी बांधे देखते हैं। सूत्रधा
थोड़ा सा आगे आता है और उस की ओर पीठ मोड़ कर खड़ा
रहता है। सुय्या द्विविधा में खड़ा अपने सिर को खुजलाता है
जैसे कुछ कहना चाहता हो, पर कह नहीं सकता हो ]

सूत्रधार :- ममता और प्रेम, सब माया है।



सुय्या

सुय्या :- माया ? हां, हां माया। परन्तु कितनी सुन्दर, कितनी प्यारी मनमोहिनी। यह माया न हो तो इस संसार की शोभा ही जाती रहे, फिर यहाँ कौन आना चाहे ?

सूत्रधार :- [ उसकी ओर देखे बिना ही तेज के साथ ] तुझे इस संसार से क्या लेना देना है ?

सुय्या :- क्यों नहीं, मैं भी तो इसी संसार का एक निवासी हूं ?

सूत्रधार :- इस लिए नहीं कि तू जंजीरों में जकड़ा जाए, माया और ममता की जंजीरों में।

सुय्या :- [ आह भर कर ] यह पता न होता तो मुझे यह जंजीरें पुष्प मालाएं ही लगती।

सूत्रधार :- बातें, बातें, केवल बातें।

सुय्या :- भगवान ने जिह्वा दी है इसलिए कि मनुष्य अपने भाव प्रकट कर सके।

सूत्रधार :- हाथ पांव भी दिए हैं कि बातों के साथ-साथ कोई काम–काज भी कर सके।

सुय्या :- एक हृदय भी दिया है कि अनुभव कर सके।

सूत्रधार :- और ?

सुय्या :- एक दिमाग, कि सोच भी सके।

सूत्रधार :- ठीक कहता है तू, परन्तु...

सुय्या :- परन्तु क्या ?

सूत्रधार :- [ तुरन्त ही उस की ओर पलट कर ] समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता ।

सुय्या :- झूठ सब झूठ ! उसे मेरी प्रतीक्षा करनी पड़ी । जब तक मैंने जन्म नहीं लिया ।

सूत्रधार :- तू जिसे जन्म-मरण का चक्कर और एक युग मानता है वह आंख झपकने के बराबर भी नहीं होता ।

सुय्या :- होगा । मगर इस धरती के रहने वालों को लगता है जैसे कि एक युग बीत गया । एक आयु समाप्त हुई । इस संसार में आना, यहां आकर अच्छे या बुरे कर्म करना और फिर प्राण त्यागना, इस में समय नहीं लगता क्या ? क्या यह भी एक भ्रम ही है, केवल माया ?

सूत्रधार :- सुय्या रहने दे, अब इन बातों का कोई लाभ नहीं देर हो रही है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता किसी की भी नहीं ।

[ सूत्रधार प्रस्थान करता है । उधर से चंडालिन और चन्द्रकान्ता आ जाती हैं । दोनों के हाथों में थाल हैं जिन में पूजा की सामग्री है । दोनों उसकी आरती उतारती और उस की बलाएं लेती हैं ]



सुय्या

चंडालिनी :- भगवान तुझे सफल करें। तुझे शक्ति और साहस दें अपना कार्य पूरा करने का धैर्य दें।

सुय्या :- [ हाथ जोड़ कर ] माँ तुम्हारा आशीर्वाद साथ रहा तो मैं अवश्य ही सफल हो जाऊंगा।

चंडालिनी :- पगले कहता है आशीर्वाद। मेरे प्राण भी तेरे साथ-साथ ही रहेंगे। [ उसके मुख पर हाथ फेर कर ] सुय्या, सुन बेटे !

सुय्या :- कह दो माँ।

चंडालिनी :- देख रे चन्द्रा को भूलना नहीं !

सुय्या :- [ हंसते हुए ] माँ फिर चतुर बन रही हो ? वही अक्लमन्दी जता रही हो ?

चंडालिनी :- कैसी अक्लमन्दी रे ?

सुय्या :- और नहीं तो क्या माँ ? वास्तव में तुम्हें कहना है कि बेटे माँ को नहीं भूलना। क्यों माँ, है न ?

[ चंडालिनी आंसू पोंछ लेती है और चुप रहती है। ]

[ सुय्या चन्द्रकान्ता के पास जाकर उसके मुख पर नज़रें जमा देता है। ]

सुय्या :- चन्द्रा, देख रही है, कैसी है हमारी यह माँ। कहती है चन्द्रा को भूलना नहीं।



सुय्या

चन्द्रा :- [ शीश झुकाती है और आह भर कर कहती है ] आह....!

सुय्या :- देख न इसे अपने विषय में कहना होता है और बीच में यूं ही तेरा नाम लेती है।

चन्द्रा :- क्या कह रहे हैं आप, आखिर मां है न आपकी।

सुय्या :- और तू ?

चन्द्रा :- मैं थी ही कब आपकी ?

सुय्या :- पगली क्या कह रही है। अच्छा जाने दे इन बातों को। अब जाता हूं। माँ तुझ को सौंप रहा हूं। देख इसे महसूस न हो कि यह अकेली है।

चन्द्रा :- नहीं, ऐसा नहीं होने दूंगी। परन्तु...

सुय्या :- परन्तु क्या ?

चन्द्रा :- मेरा क्या सोचा है आपने ?

सुय्या :- सोचना क्या है। तू तो मेरे साथ रहेगी, मेरे पास।

चन्द्रा :- [ चौंक कर ] क्या ?

सुय्या :- हां, हां, सच कह रहा हूं। तू मेरे पास ही रहेगी यहां !

[ हृदय की ओर संकेत, करता है। चन्द्रकान्ता उसके चरणों में गिर जाती है ]



सुय्या

चन्द्रा :- स्वामी !

[ मंच की रोशनी बुझ जाती है। कुछ क्षण बीतने पर
नगाड़ा बजने लगता है। लोगों की बातें और व्यर्थ का शोर
उभरता है। रोशनी धीरे-धीरे आती है। ग्रामीण वातावरण
की झलक सामने आती है। राजा अवन्तिबर्मन, जयदेव,
मंत्री और कुछ दरबारी प्रवेश करते हैं। राजा मंच के बीचों
बीच आकर रुक जाता है। बाकी लोग भी रुक जाते हैं ]

राजा :- कोई विशेष समाचार ?

मंत्री :- महाराज !

राजा :- कोई नई बात नगर में फैली हुई नहीं है क्या ?

मंत्री :- नहीं तो महाराज।

राजा :- क्या इस नगर में मनुष्य नहीं रहते ?

मंत्री :- रहते हैं महाराज।

राजा :- उन्हें किसी समस्या का सामना नहीं है क्या ?

मंत्री :- समस्या काहे की महाराज ? सभी सुख और शान्ति
का जीवन बिता रहे हैं। आपकी कृपा से यह देश बस
गया। बड़े-बड़े भवन बनाये गए। कितने ही मन्दिर
खड़े हो गए। चारों ओर सुख और शान्ति है। फिर
इसके बाद समस्या काहे की महाराज ?



पुण्या

राजा :- हां मंत्री, हम ने एक महान नगर बनाया। कितने गांव बसाये, मन्दिर बनाये, घाट बनाये। इन सब चीज़ों का निर्माण हमारी महानता का प्रमाण है। हमारे कलाकारों की चर्चा हमेशा रहेगी। परन्तु मंत्री..

मंत्री :- महाराज ?

राजा :- [व्याकुलता के साथ] यह सब कुछ तब तक व्यर्थ है जब तक हमारी प्रजा सचमुच सुख और शान्ति का जीवन बिताने के योग्य न हो जाए।

मंत्री :- मगर महाराज...

राजा :- [मंत्री की बात काट कर] तुम कहोगे कि प्रजा प्रसन्न है, सुखी है। यह कहना तुम्हारा कर्त्तव्य है। परन्तु हमारा कर्त्तव्य हम से कह रहा है, बार-बार हमें चेता रहा है कि प्रजा को कितना कष्ट है। वर्षा की एक झड़ी इसकी सारी शान्ति और सुख को लूट कर ले जाती है। एक बाढ़ सब कुछ तहस-नहस कर देती है। उस समय सुख और शान्ति की बेला समाप्त हो जाती है और इस देश का अन्न भी।

मंत्री :- सत्य वचन महाराज। यदि बाढ़ न आती तो इस देश की बराबरी कोई दूसरा देश नहीं कर सकता था।

राजा :- [व्याकुलता से इधर-उधर घूमते हुए] पर हम कर ही क्या सकते हैं ? इसका क्या उपाय हो सकता है ? कोई माई का लाल ऐसा नहीं जो बाढ़ रोकने में हमारी सहायता कर सके ?



सुध्या

जयदेव :- महाराज ! आज्ञा हो तो कुछ कहूं !

राजा :- [ जयदेव के पास आकर ] जयदेव ! तुम बहुत कम बोलते हो। परन्तु जितना भी बोलते हो उसमें तथ्य होता है। बोलो, क्या कहना चाहते हो ?

जयदेव :- महाराज, हमारे नगर में एक पंडित रहते हैं। वह कहते हैं कि उनके पास वितस्ता को वश में करने का ज्ञान है।

राजा :- [ मुख पर शंका और आशा के भाव लाकर ] एक पंडित ?

जयदेव :- हां महाराज, एक पंडित !

राजा :- नाम ?

जयदेव :- सुय्या।

राजा :- सुय्या ?

जयदेव :- हां महाराज, सुय्या !

राजा :- सुय्या है कहां ? हमारे पास आज तक आया क्यों नहीं !

जयदेव :- महाराज सुय्या इस समय एक यात्रा पर गए हुए हैं।

राजा :- यात्रा ? इस समय कौन सी यात्रा हो रही है जयदेव ?

जयदेव :- महाराज, सुय्या जिस यात्रा पर गए हैं उसके लिए यही समय उचित था। वह वितस्ता का स्रोत देखने

गये हैं। इसके किनारों को खगांलने और आंकने गये हैं। वह यह जानकारी प्राप्त करने गए हैं कि माता वितस्ता जो इस देश की शोभा है, जिसके कारण यह देश लहलहाता है, वही वितस्ता क्यों वर्षा के कुछ छींटों के बाद अपने किनारों को तोड़फोड़ देती है और इस देश की शोभा और इस लहलहाती पुरबहार घाटी को उजाड़ देती है।

राजा :- हूंह् !

मंत्री :- महाराज सुय्या तो पागल है। सब उसे बावला कहते हैं। वह सचमुच बावला है।

राजा :- मंत्री, ऐसे पुरुष बावले ही होते हैं। ऐसे पुरुषों को सभी पागल कह कर पुकारते हैं। परन्तु मंत्री...

मंत्री :- आज्ञा महाराज।

राजा :- हम इस बावले से मिलना चाहते हैं।

मंत्री :- [ आश्चर्य से ] महाराज !

राजा :- हम इस पागल के साथ बातें करना चाहते हैं। हमारा मन कहता है यह बावला अवश्य ही बाढ़ को रोकने का उपाय कर सकता है।

मंत्री :- मगर महाराज !

राजा :- [ चिल्ला कर ] मंत्री ! बुद्धि केवल तुम्हारी ही घुट्टी में नहीं पड़ी है। बुद्धि केवल राजभवनों में ही नहीं



सुय्या

उपजती। वह घास–फूस के झोंपड़ों में भी परवान चढ़ती है ऐसे हो जैसे दूर वनों के पोछे अमृत का स्रोत।

मंत्री :- महाराज, सुय्या नीच है। एक चंडालिनी का बेटा।

राजा :- बड़ी भाग्यवान होगी उसकी माता !

मंत्री :- महाराज वह पाठशाला का मामूली पण्डित है।

राजा :- उसके विद्यार्थी इस देश के होनहार सपूत बनेंगे।

मंत्री :- महाराज, सुय्या पागल है।

राजा :- हमें भा गया है उसका पागलपन। वह बावला हो गया है एक एक विशेष कार्य के पीछे। वह पागल हो गया है आदर्श के लिए। बड़ा भाग्यवान पागल होगा सुय्या। बड़ा ही कल्याणकारी बावला।

मंत्री :- परन्तु महाराज ?

राजा :- [ उसे डांट कर ] बस करो मंत्री। हम और कुछ भी नहीं सुनना चाहते। [ जयदेव से ] जयदेव !

जयदेव :- आज्ञा महाराज ?

राजा :- यात्रा से लौट आने पर सुय्या को पूरे आदर और सत्कार के साथ हमारे पास लाया जाए।

जयदेव :- जो आज्ञा महाराज।



सुय्या

राजा :- [मंत्री से] और जब तक सुय्या घर से बाहर रहें उनकी माता का पूरा ध्यान रखा जाए और हमें उससे अवगत कराया जाए। उस भाग्यवान को कोई कष्ट न हो। समझे ?

मंत्री :- आपके आदेश का पालन होगा महाराज !

राजा :- [जयदेव से] चलो जयदेव चलते हैं।

[राजा अवन्तिबर्मन, जयदेव और दूसरे दरबारी प्रस्थान करते हैं। मंत्री वहीं रह जाता है। राजा और दूसरे लोगों के चले जाने पर मंत्री दर्शकों की ओर देख कर कहता है--]

मंत्री :- जाने कहां से यह पागल आ गया और इसे राजा अवन्तिबर्मन देखे भाले और आंके बिना ही भाग्यवान पागल कहता है। सपूत और कल्याणकारी बावला ! सत्य ही कहते हैं 'राजा का अहकार उसकी बुद्धि का नाश कर देता है। और वह ऐसे ही व्यर्थ के कार्य करने लगता है।' परन्तु मुझे क्या ? लाओ सुय्या को दरबार में। मान करो उस का। पर यह तो बताओ कि हम मंत्री आदमी किसी कार्य के योग्य हैं ही नहीं क्या ? हम क्या इधर यूंही घास काटने पर लगे हुए हैं ? अरे भई, हम से विचार-विमर्श करो। हम भी बता सकते हैं कि बाढ़ का क्या उपाय हो सकता है। यह कोई बड़ी बात है क्या ? इस में करना ही क्या है ?



सुय्या

[ यहां आकर रुक जाता है और लज्जित हो कर कहता है । ] परन्तु करना क्या है ? यह अगर पता चलता तो उस पगले सुय्या की एक भी न चलने देते । फिर भी क्या हुआ । बाढ़ आती है । लोग मरते हैं। परन्तु अपनी दालरोटी तो फिर भी चलती ही रहती है । लोग जियें या मरें हम मन्त्रियों को इसकी क्या चिता ।

[ मंत्री प्रस्थान करता है, उसके जाने के साथ ही बीच का पर्दा धीरे-धीरे उतरता है। कुछ क्षणों के लिए मंच की रोशनी धीरे—धीरे धीमी पड़ती है और संध्या की सी धीमी—धीमी रोशनी रह जाती है । थका—हारा सुय्या प्रवेश करता है और गिरता पड़ता एक जगह बैठ जाता है ] ।

सुय्या :- [ कुछ क्षण रुक कर ] कितनी साधारण सी बात है और कोई समझा ही नहीं । हम सारा दोष वितस्ता के सिर पर मढ़ते हैं। जाने कितने वर्षों से वितस्ता ऐसे ही बहती चली आ रही है, अपने साथ मिट्टी और रेत बहाती हुई । सारा मैल इस के तल पर इकट्ठा हो गया है जब लोग छोटी नदियों और नालों के तल तक को साफ करते हैं तो वितस्ता को क्यों भूल बैठे हैं ? वितस्ता के किनारे समय के साथ-साथ नीचे आते गए, तल ऊपर उठता रहा । थोड़ी सी वर्षा से बाढ़ न आए तो और क्या हो । यदि वितस्ता के तल से मिट्टी, रेत पत्थर निकाले जाएं, इसके किनारों को ऊंचा कर दिया जाए तो बाढ़ कभी नहीं आएगी । [ खड़े होकर ]

परन्तु, मैं ने अभी तक सब कुछ देखा ही नहीं। वितस्ता का स्रोत और उसके किनारे आंकने के बाद मुझे अभी कामराज्य जाना पड़ेगा अभी तक मुझे महापद्मासर भी देखना है। कामराज्य में बाढ़ इसी झील के कारण आती है। [ आकाश की ओर देखकर ] संध्या हो चुकी और मैं अभी तक गांव से बहुत दूर हूं। मुझे चलना चाहिए।

[ चलने लगता है, एक पुरुष प्रवेश करता है और टकटकी बांध कर सुय्या की ओर देखता है ]।

सुय्या :- [ उस के निकट आकर ] हे भैया।

पुरुष :- हां भैया।

सुय्या :- यहां आस—पास कोई गांव नहीं है क्या ?

पुरुष :- है क्यों नहीं ?

सुय्या :- कहां है ? उस गांव का नाम क्या है ?

पुरुष :- [ हाथ से संकेत करते हुए ] वह रहा। उस गांव का नाम था—नंदका।

सुय्या :- नंदका ? नाम था ? अब क्या कहते हो इसे ?

पुरुष :- उजाड़, शून्य।



सुय्या

सुय्या :- हे भैया ! मुझे पत्थर समझकर मेरी हंसी तो नहीं उड़ा रहे हो। मैं यहां रात भर के लिए ठहरना चाहता था।

पुरुष :- तो उस में क्या एतराज़ है? तुम मज़े से रात भर ठहर सकते हो। बहुत अच्छी तरह रह सकते हो।

सुय्या :- धन्यवाद ! भोजन का भी कुछ प्रबंध हो सकेगा क्या ?

पुरुष :- [ हंसते हंसते दोहरा हो जाता है ] क्यों नहीं, क्यों नहीं जाओ और नंदका गांव को देख लो। देखने के योग्य है वह। सारा गांव पानी में डूब गया है। हां मंदिर का कलश दिख रहा है।

सुय्या :- [ चौंक कर ] क्या कहा ?

पुरुष :- [ वैसे ही ] सुनते जाओ, सुनते जाओ। रहा तुम्हारा भोजन, तो, उसकी भी कोई चिंता नहीं यदि तुम्हारे पास बंसी है तो मछली पकड़ लेना और उसी पर गुजारा कर लेना। वह न हुई तो गंदले जल में उतर कर राम मछली पकड़ लेना। मगर टोकरा है तुम्हारे पास मछली पकड़ने के लिए ?

[ फिर ज़ोर—ज़ोर से हंसता है ऐसे जैसे रो रहा हो। सुय्या बड़ा निराश हो कर उसे देखता है ]।

सुय्या :- तो नंदका भी पानी में डूब गया।



सुय्या

पुरुष :- यह कौन सी नई बात है भाई। रोज़ ऐसे ही होता है, हमेशा ही।

सुय्या :- और गांव के निवासी ?

पुरुष :- जिसके सींग जिधर समाएं, भाग जाता है। पर्वतों की ओर चला जाता है रोता, बिसूरता, माथा पीटता और अपने कर्मों को कोसता हुआ।

[ यही कह कर निकल जाता है ]

सुय्या :- [ बहुत ही निराश हो कर ] नंदका एक गांव है। ऐसे मैंने सैंकड़ों गांव देखे जो पानी के नीचे आ गए थे। [ तड़पकर ] और मेरी यात्रा अभी तक पूरी नहीं हुई। नहीं, नहीं, मैं अब रुकूंगा नहीं। मैं सुस्ता भी न लूंगा। मैं आगे निकल पड़ूंगा, नहीं तो देर हो जाएगी। अब नहीं ठहरूंगा। मैं जाऊंगा ! जाऊंगा !!

[ यही कहते-कहते फौरन एक विंग से प्रस्थान करता है। मंझला पर्दा उठता है। चन्द्रकान्ता अपने झोपड़े के बाहर आंगन में बैठी हुई तुरन्त ही खड़ी हो जाती है और चीखती है ]

चन्द्रा :- स्वामी !

[ इसके बाद अपनी ओढ़नी का पल्लू मुंह में डालती है, कुछ क्षण गुज़रने पर वह अपने झुके सिर को ऊपर उठाती है ]



सुय्या

चन्द्रा :- कितनी पापिन हूं मैं ! मेरे स्वामी न जाने कहां–कहां की धूल फांक रहे होंगे और मैं यहां आनंद से बैठी हूं। मेरे कर्म कभी भी मेरा पीछा नहीं छोड़ेंगे। मेरे ही बुरे कर्मों के कारण मेरी माता बाढ़ में बह गई। मेरा मायका उजड़ गया। ससुराल में आकर भी मुझे सुख और शांति प्राप्त न हुई। यहां भी मैं अकेली रह गई। [ तड़पकर मंच पर घूम-घूम कर जोर-जोर से कहती है ] मेरे प्रभु ! मेरा दोष क्या है ? कौनसा अपराध हुआ है मुझ से प्रभु ?

[ चंडालिनी धीरे-धीरे झोंपड़े से निकल आती है। अंतिम बात सुन चन्द्रकान्ता की ओर देखती है और लेती है ]।

मेरे प्रभु ! तुम तो अंतर्यामी हो न ? फिर मेरी यह तड़पन क्यों नहीं देखते ? मेरे हृदय की ओर क्यों नहीं देखते ? देख लो प्रभु ! मेरा हृदय दुखों से छलनी हो चुका है, छलनी।

चंडालिनी :- [ चन्द्रकान्ता के पास जा कर ] चन्द्रा बेटी !

चन्द्रा :- [ सिर पर पल्लू संभाल कर ] मां !

चंडालिनी :- चन्द्रा बेटी, अभी-अभी मेरी आंख लगी थी न ?

चन्द्रा :- हां माँ।

चंडालिनी :- सपना आया मुझे।

चन्द्रा :- सपना ?

चंडालिनी :- हां सपना। सपने में सुय्या को देखा।

चन्द्रा :- सच माँ ?

चंडालिनी :- हां उसी की सौगंध। मैंने देखा कि वह एक ऊंचे टीले की ओर ऊपर ही ऊपर जा रहा है और मैं उसके पीछे-पीछे उसे पुकारती बढ़ी जा रही हूं। परन्तु वह माई का लाल पीछे पलट कर देखे भी ना। मैं तो उसके पीछे दौड़-दौड़ कर थक-हार जाती हूं। परन्तु उस बावले को पता भी नहीं चलता।

चन्द्रा :- माँ।

चंडालिनी :- सुनती जा चन्द्रा। अंत में मैं बड़ी मुश्किल से टीले के ऊपर जा पहुंची। वहां पहुंच कर मैंने एक विचित्र दृश्य देखा।

चन्द्रा :- क्या दृश्य था माँ ?

चंडालिनी :- एक बड़ी भीड़ सुय्या के स्वागत के लिए, उसके चरण छूने के लिए आ गई और वह मेरा लाड़ला बेटा प्रत्येक बन्धु को अपने चरणों से उठा कर पूछता ... [ गला रुँ सा जाता है ] पूछता है।

चन्द्रा :- क्या पूछ रहे थे माँ ?

चंडालिनी :- पूछ रहा था मेरी चन्द्रा नहीं आई ?

चन्द्रा :- माता जी !

[ यह कह कर चंडालिनी को गले लगा लेती है और सिसकने लगती है ]

चंडालिनी :- चन्द्रा, चिंता न कर बेटी। बहुत हो अच्छा सपना है यह तो। इसका अर्थ यह है कि मेरा सुय्या सफल हो गया। उसकी यात्रा सफल हो गई।

[ चन्द्रकान्ता के शिर को अपने कंधे से ऊपर उठाती है और उस के आंसुओं को पोंछ कर कहती है ]

चंडालिनी :- पगली, रो रही है? चिंता न कर। अब तो वह आ ही रहा होगा, मेरी बात को गांठ में बाध ले। हां!

चन्द्रा :- मुझे क्षमा करो माँ। मुझे यह बचपना नहीं करना चाहिए। तुम उनकी माँ हो। तुम ने कभी चिंता न की। कभी उनकी बात भी न की...।

चंडालिनी :- चन्द्रा, मैं जानती हूं कि मैं कितनी भाग्यवान माँ हूं। [ चन्द्रकान्ता को छोड़ बड़े तेज के साथ ] सुय्या तेरा स्वामी और मेरा बेटा ही नहीं वह और भी बहुत कुछ है। सब का भला चाहने वाला। तू ही कहा करती थी बचपन में कि सुय्या को इस देश का अन्नपति बनना है। अन्नपति!

चन्द्रा :- अगर मेरी वह बात पूरी हो तब तो मैं भी बड़ी भाग्यवान और सौभाग्यवती बनूंगी। तब मुझे उनके

लिए यूं व्याकुल और आतुर नहीं होना चाहिये। घर-गृहस्थी के सभी सुख प्राप्त करने पर भी प्रायः स्त्रियां ऐसी भाग्यवान नहीं बनती माँ।

चंडालिनी :- चन्द्रा, तू निस्संदेह भाग्यवान है। मुझ से भी अधिक भाग्यवान।

[ जयदेव प्रवेश करता है और दोनों स्त्रियों के पास पहुँचकर उन्हें नमस्कार करता है ]

जयदेव :- नमस्कार स्वीकार हो।

चंडालिनी :- [ अचरज से ] नमस्कार। कहिए क्या आज्ञा है ?

जयदेव :- आप पंडित सुय्या के घर वाले हैं न ?

चंडालिनी :- हां, मैं उसकी माता हूं और यह उसकी पत्नी है। वह ठीक है न ? कोई सूचना तो नहीं भेजी उसने ?

जयदेव :- मुझे महाराज ने आपके पास भेजा है। उन्होंने नमस्कार कहा है। सुय्या ठीक हैं और शीघ्र ही राजधानी लौट रहे हैं।

चंडालिनी :- महाराज की जय हो। आयु और प्रताप बढ़े उनका।

जयदेव :- महाराज की आज्ञा है कि आप लोगों की हर एक आज्ञा का पालन हो यदि आपको किसी भी वस्तु की आवश्यकता हो, आज्ञा दीजिए, प्रस्तुत की जाएगी।



सुय्या

चंडालिनी :- महाराज की आयु बढ़े, महारानी की कोख हरी रहे। हमें किसी भी चीज़ की आवश्यकता नहीं। परन्तु... परन्तु महाराज को हमारी चिंता क्यों? एक चंडालिनी की इतनी फिकर काहे को?

जयदेव :- माता, आप नहीं जानतीं, सुय्या क्या कर रहे हैं। वह इस देश का दुःख और इसकी पीड़ा मिटाने निकले हैं। महाराज को विश्वास है कि सुय्या अपने उद्देश्य में सफल होंगे।

चंडालिनी :- महाराज का कहा सत्य हो और सुय्या सफल हो। बस मुझे इस के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहिये। इसी से मेरे जीवन की सारी कामनाएं पूरी होंगी।

जयदेव :- जय देवी! जय माता!

[ प्रस्थान करता है। उसके जाने के साथ ही चन्द्रकान्ता चंडालिनी को अपनी बाहों में भर लेती है। और जोर से कहती है ?...]

चन्द्रा :- माता जी!

[ मंझला पर्दा धीरे-धीरे उतरता है और जब नेपथ्य द्रष्टि से ओझल हो जाता है तो एक विंग से सूत्रधार नृत्य करता हुआ आता है। नाचते—नाचते उस के पग तेज़-तेज़ उठते हैं। कुछ क्षण वह इसी तरह नृत्य करते-करते एक विशेष मुद्रा में यह शब्द कहता है ] :—



सुय्या

सूत्रधार :- आदरणीय सुय्या ।

तीन आदमी:-[ दाएं विंग से नाचते हुए आते हैं ] सुय्या, सुय्या !

सूत्रधार :- [ फिर वैसे ही ] आदरणीय सुय्या !

तीन आदमी:-[ बाएं विंग से नाचते हुए आते हैं ] सुय्या, सुय्या !

[ सब नाचते हैं । सूत्रधार पहले शब्द दोहराता है और बाकी उसका उत्तर देते हैं ]

सूत्रधार :- कौन है सुय्या ?

बाकी :- अन्नपति सुय्या ।

सूत्रधार :- कल्याणकारी ।

बाकी :- सुय्या, सुय्या !

सूत्रधार :- जय हो, जय हो ।

बाकी :- सुय्या, सुय्या !

[ नृत्य की गति तेज़ हो जाती है । शब्द रह जाते हैं और जब नृत्य चरमावस्था पर पहुंच जाता है तो तीन आदमी नाचते--नाचते एक विंग से और दूसरे तीन दूसरे विंग से निकल जाते हैं । सूत्रधार उनके प्रस्थान के बाद भी कुछ क्षणों तक नाचता है और फिर रुक कर अपनी पीठ दर्शकों की ओर कर लेता है । रुकता है । इसके बाद वह धीरे--धीरे अपना

शरीर आगे की ओर मोड़ लेता है और धीरे से हंस कर कहता है :— ]

सूत्रधार :- कहीं मैंने अपने आप ही अपने भेद को खोला तो नहीं। सुय्या अभी तक आया भी नहीं और मैंने इधर उसे आदरणीय अन्नपति बना भी दिया। बेचारे पर उधर जाने क्या कुछ बीत रही होगी और इधर मैं नाच रहा हूं, गा रहा हूं और हंसे जा रहा हूं। परन्तु सत्य यह है कि यदि सुय्या अपने कार्य में सफल हो गया तब तो तुम भी गाओगे, नाचोगे और हंसोगे। इसलिए कि तब वर्षा की कुछ बूंदें, काली घटाओं से भरा--पुरा आकाश, बादलों की घनघोर गरज और बिजलियों की कड़क से तुम घबराया नही करोगे। तब तो वितस्ता तुम्हारी मुट्ठी में होगी। तुम्हारी दासी बनी हुई।

[ सूत्रधार को खबर किए बिना ही सुय्या प्रवेश करता है ]।

परन्तु उसकी यात्रा बहुत लम्बी–चौड़ी है। गंतव्य तक उसका पहुंचना कठिन है। सुय्या को अभी बहुत कुछ करना है। अब तो वह यहां आ ही रहा होगा। जाने इतनी देर क्यों लगा दी उसने ?

[ यही कहते--कहते एक विंग से निकलने लगता है। परन्तु सुय्या उसकी बांह पकड़ कर उसे अपनी ओर खींच लेता है। ]

सुय्या :- कहां भाग रहा है ?

सूत्रधार :- [ हड़बड़ा कर ] मैं—मैं—मगर ?

सुय्या :- अगर–मगर रहने दे। मैं ने तुझे कई बार यूं ही जाने दिया। पर अब की बार नहीं जाने दूंगा।

सूत्रधार :- मगर मेरा दोष ?

सुय्या :- [ उसकी बांह छोड़ कर ] तेरा दोष यही है कि तू हर समय भागता रहता है। कभी हाथ नहीं आता। परन्तु मुझ से भागेगा कहां ? मैं कहां जाने दूंगा तुझे !

सूत्रधार :- लेकिन क्यों ?

सुय्या :- इस लिए कि मुझे तेरे साथ बहुत सी बातें करनी हैं।

सूत्रधार :- [ बुद्धू बन कर ] अरे मेरे साथ क्या बातें करेगा तू ! मैं तुझे थोड़े ही जानता हूं ?

सुय्या :- [ उस के पास आकर ] तब मेरे गीत क्यों गा रहा था ?

सूत्रधार :- [ बुद्धूओं की भांति हंस कर ] गीत ? तेरे गीत ?

सुय्या :- हां, हां, नहीं कह रहा था कि मैं अन्नपति हूं, आदरणीय हूं, कल्याणकारी हूं ?

सूत्रधार :- तुझे धोखा हो रहा है। मैं किसी के गीत नहीं गाता।

सुय्या :- झूठ न बोल। मैंने स्वयं अपने कानों से सुने हैं यह गीत !

सूत्रधार :- [ गर्जकर ] सुय्या ।

सुय्या :- [ हाथ जोड़कर ] आज्ञा महाराज ?

सूत्रधार :- [और ज्यादा गर्ज कर ] पंडित ?

सुय्या :- [ वैसे ही हाथ जोड़कर ] मैं आपका यही रूप देखना चाहता था ।

सूत्रधार :- जा, देर न कर। तुझे अभी बहुत कुछ करना है ।

सुय्या :- अब कहां जाऊं मैं महाराज ? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा ?

सूत्रधार :- याद है जब तूने जन्म लिया था ?

सुय्या :- हां याद है। जैसे कल ही की बात हो।

सूत्रधार :- तुझे सुय्या चंडालिनी ने उठा लिया था ।

सुय्या :- माता कश्मीर ने। मेरी माँ सुय्या ने ।

सूत्रधार :- सुय्या एक चंडालिनी स्त्री थी ।

सुय्या :- वह एक भाग्यवान माता है ।

सूत्रधार :- तू उसी के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

सुय्या :- मैंने स्वयं ही यह नाम अपने लिए चुन लिया था। यह सोचकर कि इस से माता के दूध का बदला उतार सकूंगा ।

सूत्रधार :- तूने ठीक नहीं सोचा। ग़लत सोचा। माँ के दूध का ऋण अभी तक उतरा नहीं।

सुय्या :- मगर...?

सूत्रधार :- माता कश्मीर का दूध।

सुय्या :- जानता हूं महाराज।

सूत्रधार :- तो फिर अपना समय क्यों गंवा रहा है? जा तेरी माता तेरी प्रतीक्षा कर रही है। माता कश्मीर तेरी राह देख रही है।

सुय्या :- मैं माता के पास जाऊंगा। उनके चरण छू लूंगा और कह दूंगा—माँ! तुम्हारे दूध का ऋण अभी तक मुझ पर बाकी है। वह ऋण तभी उतर सकेगा जब मैं इस देश के सारे दुःख दर्द मिटा सकूंगा। जब वितस्ता मेरे वश में होगी और जब लोग बाढ़ से मारे नहीं जायेंगे।

सूत्रधार :- [ फिर बुद्धू बन कर ] अरे देख, यह राजा के आदमी तुझे ढूंढ रहे हैं।

सुय्या :- [ अपने आप में आकर ] कहां हैं? मैं भी उन्हीं की प्रतीक्षा कर रहा था।

सूत्रधार :- वह रहे। इधर ही आ रहे हैं।

सुय्या :- [ प्रसन्नता से ] अब मेरा स्वप्न पूरा होगा।



सुय्या

[ एक विंग से मंत्री और दो तीन आदमी प्रवेश करते हैं और सुय्या एवं सूत्रधार के पास आकर रुक जाते हैं। मंत्री बड़ी घृणा से उन दोनों को सिर से पांव तक देखता है ]

मंत्री :- तुम दो में से वह पागल कौन सा है ?

सूत्रधार :- [ डरते डरते ] यह रहा। मैं नहीं हूं, मैं नहीं हूं।

मंत्री :- [ सुय्या से ] तो तुम ही वह पागल हो ?

सुय्या :- हां, मैं ही वह पागल हूं।

मंत्री :- [ व्यंग्य से ] पागलपन कहां तक पहुंचा ?

सुय्या :- बहुत ही बढ़ गया अब तो।

मंत्री :- अब भी वितस्ता के सपने देखते हो ?

सुय्या :- जिसे आप सपना कहते हैं वह मेरे जीवन का सब से बड़ा सत्य है।

मंत्री :- इसका अर्थ यह हुआ कि बावलापन अभी तक बाकी है ?

सुय्या :- मरते समय तक बाकी रहेगा।

मंत्री :- अफ़सोस ! इस लम्बी यात्रा ने भी तुम्हारी आंखें नहीं खोलीं।

सुय्या :- इसी यात्रा ने मुझे सत्य का मार्ग दिखाया।

मंत्री :- [ घृणा से ] हूंह् ! सत्य का मार्ग। [ सुय्या की ओर संकेत करके ] इस बावले से कह दो कि महाराज अवंतिवर्मन इस से मिलना चाहते हैं।

सुय्या :- मैं तैयार हूं, चलिए।

[ सुय्या आगे-आगे और उसके पीछे मंत्री और बाकी आदमी भी जाते हैं। सूत्रधार मंच पर अकेला रह जाता है और अपने आप हंसता रहता है। इसके बाद वह अपने कंधों को झटक कर प्रस्थान करना चाहता है मगर सामने के विग से चन्द्रकान्ता बड़ी घबराहट में हांपती-कांपती प्रवेश करती है और सूत्रधार के पास आकर उससे पूछती है :—]

चन्द्रा :- अरे भैया ?

सूत्रधार :- क्या है बहना ?

चन्द्रा :- उन्हें देखा ?

सूत्रधार :- किसे ?

चन्द्रा :- मेरे स्वामी को।

सूत्रधार :- तेरे स्वामी को, कौन ?

चन्द्रा :- मेरे स्वामी, पंडित।

सूत्रधार :- सुय्या ?

चन्द्रा :- हां, हां, वही।

सूत्रधार :- और लो ?

चन्द्रा :- [ डरकर ] क्या बात है !

सूत्रधार :- राजा के यहां से उसे बुलावा आया था। उसी के आदमी ले गए उसे।

चन्द्रा :- [ छाती पीट कर ] हाय, मैं मरी। कोई अपराध तो नहीं हुआ उनसे ?

चंडालिनी :- [ जो धीरे-धीरे प्रवेश कर चुकी है ] चन्द्रा !

चन्द्रा :- माँ, यह कह रहा है कि उन्हें राजा के यहां से बुलावा आया था ?

सूत्रधार :- वही कह रहे थे। कोई अपराध हुआ उससे ?

चंडालिनी :- [ उसे डांट कर ] मुंह संभाल कर उस का नाम लो। सुय्या कोई ऐसा–वैसा नहीं है। वह कल्याणकारी है। सब का भला करने वाला। मैं जानती हूं कि राजा ने उसे किस लिए बुला भेजा है।

सूत्रधार :- [ बुद्धूओं की तरह ] ही, ही, ही कल्याणकारी। हो, हो, हो सब का भला चाहने वाला। होगा, तुम थोड़े ही झूठ कहोगी। हा, हा, हा।

[ हंसते-हंसते ही प्रस्थान करता है। चन्द्रकान्ता भयभीत होकर उसे देखती रह जाती है। ]

चन्द्रा :- माँ !

चंडालिनी :- चल चन्द्रा, घर चलते हैं। यहां उसकी प्रतीक्षा करना उचित नहीं। हो सकता है कि वह घर चला जाये। हमें वहां न देख कर घबरा जाये, चल।

[ चन्द्रकान्ता निढाल सी चंडालिनी के साथ प्रस्थान करती है। मंझला पर्दा उठता है। राजा अवंतिबर्मन सिंहासन पर बैठा हुआ है। दाएं-बाएं दरबारी हैं। एक विंग से मंत्री प्रवेश करता है ]

मत्री :- महाराज की जय हो।

राजा :- सुय्या आए नहीं क्या ?

मंत्री :- महाराज उसी बावले को यह सेवक साथ लाया है।

राजा :- [ प्रसन्न हो कर ] कहां हैं ? इधर आए क्यों नहीं ? हम उनकी राह देख रहे हैं।

मंत्री :- [ आते हुए सुय्या की ओर देख कर ] यह रहे महाराज !

[ सुय्या प्रवेश करके राजा को नमस्कार करता है। राजा सिंहासन से उठता है उसके साथ ही दरबारी भी खड़े होते हैं। राजा सुय्या के सामने आता है और उसकी आंखों में आंखें डालकर देखता है ]

राजा :- तो तुम ही हो...?

सुय्या :- ...आपका दास सुय्या।



सुय्या

राजा :- तो फिर देर काहे की ?

सुय्या :- केवल आपकी आज्ञा की महाराज। उसी की प्रतीक्षा कर रहा हूं।

राजा :- आज्ञा, आज्ञा नहीं सुय्या, हमारी प्रार्थना है यह। हम सब की ओर से प्रार्थना है कि तुम अपना कार्य आरम्भ करो।

सुय्या :- बस महाराज, मुझे आपकी अनुमति की प्रतीक्षा थी। मेरा यह जन्म अब सफल होगा। मैं अपने आदर्श को निभा सकूंगा।

राजा :- प्रभु की माया किसी की समझ में नहीं आती। हम चाहते हैं कि यह देश आबाद हो। सुख और शान्ति का राज रहे यहां। लोग फलें, फूलें और सुखी रहें।

सुय्या :- महाराज आपकी मनोकामना पूरी करने के लिए ही मैंने जन्म लिया है।

राजा :- भगवान तुम्हें सफल करें।

सुय्या :- बस महाराज आपका आशीर्वाद चाहिए।

राजा :- सुय्या, तुम्हें जिस चीज़ की भी आवश्यकता हो, बोलो। प्रस्तुत की जायेगी।

सुय्या :- अपने लिए मुझे कुछ भी नहीं चाहिए महाराज, परन्तु अपना कार्य पूरा करने के लिए मुझे कुछ कामगार, कुछ नौकाएं और कुछ दीनार चाहिएं।



सुय्या

राजा :- सब कुछ दिया जायेगा, सब कुछ। हमारा राजकोष, नौकर–चाकर, जो कुछ भी तुम कहोगे। सब कुछ दिया जाएगा।

सुय्या :- बस, महाराज बस। अब सब कार्य पूरा हो जायेगा।

राजा :- [ मंत्री से ] मंत्री !

मंत्री :- आज्ञा महाराज ?

राजा :- हमारे बाद यदि तुम्हें किसी और की आज्ञा माननी होगी तो वह पंडित सुय्या की आज्ञा है। उनका आदेश।

मंत्री :- मगर......मगर महाराज ?

राजा :- मंत्री !

मंत्री :- हां महाराज ?

राजा :- यह हमारा आदेश है। महाराज अवंतिबर्मन की आज्ञा।

मंत्री :- महाराज, आपकी आज्ञा का पालन किया जायेगा।

राजा :- हमारे आदेश के पालन में कोई कमी रह जाये तो उसका परिणाम...?

मंत्री :- [ डर कर ] जानता हूं महाराज, जानता हूं। कोई कमी नहीं रहने दी जायेगी।



सुय्या

राजा :- हूंऽ। [ सुय्या के कंधों पर हाथ रख कर ] सुय्या, चलो हम चलते हैं।

[ सुय्या के साथ निकलता है। दरबारी भी चले जाते हैं। केवल मंत्री पीछे रह जाता है और माथा पीट कर कहता है...]

मंत्री :- अफसोस ! इस राजा का मंत्री होने पर भी मुझे उस बावले का दास बनना पड़ा। उचक्के ! खज़ाना लूटना चाहता है तो कोई और छल-कपट कर। डामरों को इकट्ठा कर, लूट मचा। यूं बगला भगत बन कर क्यों लूटने आया है ? मगर मेरा है क्या ? जो जी में आये करे। हमें तो अपनी दाल-रोटी मिलनी चाहिए। है न ...?

[ मंझला पर्दा उठता है और तीन पुरुष एक दूसरे के पीछे प्रवेश करते हैं। यह वही तीन पुरुष हैं जिन्होंने पहले के एक दृश्य में सुय्या की आलोचना की थी ]

एक :- राजा का आदेश सुना।

दूसरा :- हां भई सुना।

तीसरा :- और तुम उसे पागल और बावला कह रहे थे।

एक :- अरे तुम ही नें तो कहा था कि उसका दिमाग खराब सा हो गया है। हमारे बालकों को कौन पढ़ायेगा।



सुय्या

दूसरा :- अरे तुम ही तो कह रहे थे।

तीसरा :- अरे बाबा अब काहे को एक दूसरे की टांग खींचते हो ?

दूसरा :- हां, अब देखना यह है कि सुय्या क्या करेगा ?

एक :- अरे करना क्या है, राजा को शीशे में उतार दिया। स्वयं मज़े लूटेगा, राजकोष खाली कर देगा। राजा के भंडार हम भरते फिरें, राजकोष हम से बनें और लूट करने वाले कोई और ही निकल आएं ...

दूसरा :- नहीं भाई, कुछ न कुछ तो करना ही होगा उसे।

एक :- हां, हां मक्खियां मारता फिरेगा। लूट मचाकर किसी दिशा में निकल पड़ेगा। और एक दिन राजा के पास आकर उस से कह देगा, [ अभिनेताओं की तरह ] हे महाराज, हम से बड़ा अपराध हुआ। भगवान की इच्छा के बिरुद्ध चलना महापाप है। भगवान चाहते हैं कि बाढ़ आती रहे। मनुष्य इसका कुछ भी नहीं कर सकता।

तीसरा :- क्यों नहीं कर सकता ?

एक :- क्या कर सकता है ?

दूसरा :- उधर से बाढ़ आई, इधर छाज ले कर उसे रोक दिया।

[ तीनों ज़ोर-ज़ोर से हंसते हैं। सूत्रधार दौड़ता हुआ आता है और उनके पास आकर उन की ओर उंगली उठाता है। रुकता है। आश्चर्य से उन्हें देखता है। इसके बाद स्वयं भी इतने जोर से हंसता है कि वह तीनों पुरुष अपने-अपने स्थान पर गड़ से जाते हैं और भयभीत होकर सूत्रधार को देखते हैं ]

सूत्रधार :- [ एक की ओर उंगली उठा कर ] पागल !

एक :- [ चिल्ला कर दो पग पीछे हटता है ] बाप रे !

सूत्रधार :- [ दूसरे की ओर उंगली उठा कर ] बावला !

दूसरा :- [ चिल्ला कर दो पग पीछे हटता है ]। हाय, मेरी माँ !

सूत्रधार :- [ तीसरे की ओर उंगली उठा कर ] सिरफिरा !

तीसरा :- [ चिल्ला कर दो पग पीछे हटता हुआ ] हाय, मेरे प्रभु !

[ सूत्रधार उनकी कायरता को देख कर ज़ोर-ज़ोर से हंसता है। तीनों पुरुष मारे डर के उलटे पांव प्रस्थान करना चाहते हैं। सूत्रधार ज़ोर से हंसता है और उनकी ओर जाता है। तीनों पुरुष पीठ मोड़े बिना ही एक वि[ंग] से निकल जाते हैं। सूत्रधार भी उनके साथ ही प्रस्थान करता है। बीच का पर्दा उनके जाने के साथ ही उठता है। सुख्या अपने घर के आंगन में चटाई पर बैठा भोजन कर रहा है। चन्द्रकान्ता पंखा हाथ में लिए झुला रही है और साथ ही सुख्या के थाल में सब्जी आदि डालती आ रही है ]

सुय्या :- तो तुझे मेरा विरह बहुत सता रहा था ना ?

चन्द्रा :- भोजन कीजिए। माँ सब सुन रही होगी।

सुय्या :- सुनने दे, उसने भी अपने स्वामी के साथ ऐसी हो बातें की होंगी, है ना ?

चन्द्रा :- मैं क्या जानूं ?

सुय्या :- तो फिर क्या है ?

चन्द्रा :- हमें ऐसी बातें नहीं करनी चाहिएं।

सुय्या :- भला वह क्यों ?

चन्द्रा :- ओऽ हो आप तो पीछे ही पड़ जाते हैं।

सुय्या :- नहीं मुझे बताती जा कि मेरे विरह में तू इतना क्यों तड़पी थी ?

चन्द्रा :- इसलिए कि आप मेरे विरह में तड़पे नहीं थे। समझे ?

सुय्या :- चन्द्रा, भगवान की सौगंध कभी-कभी तो मेरा कलेजा फट जाता था।

चन्द्रा :- आपके दुश्मन का कलेजा फटे। यह क्या कह रहे हैं ?

सुय्या :- पर कहता किससे ? वहां कौन था ? मिट्टी के टीले, रेत का सागर, नदी के छोर, वितस्ता और उसका जल। कौन सुनता ?

चन्द्रा :- कोई आपसे बातें करना सीखे। चुप-चाप खाना खाइए अब !

[ सुय्या चन्द्रा के मुंह में ग्रास डाल देता है। ऐसे कि चन्द्रा को खबर तक नहीं होने देता और स्वयं धीरे-धीरे मुस्कराता हुआ झोंपड़े की ओर देखता रहता है। ]

सुय्या :- ले दूसरा निवाला ले।

चन्द्रा :- नहीं तो...आप भ्रष्ट हो जायेंगे।

सुय्या :- मैं और भ्रष्ट हो जाऊं ? नहीं चन्द्रा। मैं अग्नि हूं अग्नि। इस में जो कुछ भी चला जाता है, शुद्ध और पवित्र बन जाता है।

[ यही कहते कहते वह चन्द्रकान्ता के मुंह में दूसरा निवाला डाल देता है। और एक बार फिर धीरे-धीरे मुस्कराता है। झोंपड़े के अन्दर से चंडालिनी पुकारती है...]

चंडालिनी :- अरी चन्द्रा, कुछ और तो नहीं चाहिये इसे ?

सुय्या :- अरी जवाब दे न माँ को। वह बुला रही है तुझे।

[ चन्द्रकान्ता चाह कर भी मुंह भरा होने के कारण उत्तर दे पाने में असमर्थ रहती है और परेशान सी होकर सुय्या को देखती है ]

सुय्या :- नहीं माँ, मुझे और कुछ नहीं चाहिये।



सुय्या

चंडालिनी :- [ बाहर आकर ] क्यों री चन्द्रा बात का जवाब ही नहीं देती तू तो...

[ चंडालिनी चन्द्रकान्ता के उभरे हुए गालों को देख कर रुक जाती है फिर धीरे से मुस्कराती है । चन्द्रकान्ता लज्जित होकर सिर झुका लेती है । सुय्या परिस्थिति से अनजान बनने का भाव प्रकट करता हुआ खाना खाता रहता है ।]

सुय्या :- माँ ! यह चन्द्रा अच्छा खाना बना ही नहीं सकती !

चंडालिनी :- माँ तुझ पर वारी जाये मेरे बेटे । तभी तो उसे ही खिलाये जा रहा है ।

[ चन्द्रकान्ता पंखा फेंक कर खड़ी हो जाती है और दौड़ती हुई मंच से बाहर निकल जाती है ]

सुय्या :- बस माँ ! आओ मेरे हाथ धुलाओ ।

[ चंडालिनी उसके हाथ धुलाती है । हाथ धोने और कुल्ला करने के बाद खड़े होकर सुय्या अपने पेट पर हाथ फेरना आरम्भ कर देता है । ]

सुय्या :- माँ, आज बहुत दिनों बाद भर पेट भोजन किया है मैंने ।

चंडालिनी :- [ बर्तन समेटते हुये ] बड़ा भाग्यवान है न, इसलिए !

सुय्या :- क्या कह रही हो माँ ? इस में भाग्य की क्या बात है ?



सुय्या

चंडालिनी :- और नहीं तो क्या ? उन बेचारों की क्या दशा होती होगी जिन्हें कभी भी भरपेट खाना नहीं मिलता ? और उनकी क्या दुर्दशा होती होगी जिन्हें कितने ही दिनों तक कुछ भी नहीं मिलता ?

सुय्या :- [ चौंक कर ] माँ ?

चंडालिनी :- [ बर्तन एक ओर रख कर ] कह दे। हाँ-हाँ कह दे कि खाने का सारा स्वाद ही मेरी बातों से जाता रहा।

सुय्या :- माँ !

चंडालिनी :- सुय्या, तुझे यहां आये हुए पूरे पंद्रह दिन हो गए हैं।

सुय्या :- हां ! तो फिर ?

चंडालिनी :- राजा ने सब कुछ तैयार कर रखा है। नौकाओं का बेड़ा, दास, कामगार, खाने का भंडार और दीनार...

सुय्या :- जानता हूं माँ। तो फिर क्या हुआ ?

चंडालिनी :- सब की आंखें तुझ पर लगी हैं।

सुय्या :- ओह्। पर अभी कौन सी देर हुई है माँ ?

चंडालिनी :- [ मंच के मध्य भाग में आकर बड़े तेज के साथ ] सुय्या ! लगता है ज़ंजीरें एक बार फिर तुम्हें जकड़ रही हैं।

सुय्या :- ज़ंजीरें ? कैसी ज़ंजीरें माँ ?

चंडालिनी :- यही घर की, प्रेम की, माँ को ज़ंजीरें।

सुय्या :- माँ ! यह तुम क्या कह रहो हो ? तुम भी...?

चंडालिनी :- बस कर सुय्या बस कर ! तूने बड़ो देर लगाई है। जैसे भी हो तुझे शीघ्र ही काम पर जाना चाहिए। एक-एक क्षण बड़ा मूल्यवान है। इसे न गंवा। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। देर मत लगा सुय्या, देर मत लगा !

सुय्या :- [ विचारों में डूब कर ] समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। वह अद्भुत प्राणी...वह भी यही कह रहा था और माँ भी यहो कह रही है। परन्तु समय का यह चक्कर मुझे ही पीसने के लिए चले जा रहा है क्या ?

चंडालिनी :- सुय्या ! मैंने शगुन निकलवाया है। कल सूर्योदय होते ही तू चल पड़ेगा। अच्छे शगुन और शुभ घड़ियां बार-बार नहीं आतीं।

सुय्या :- यदि तुम यही चाहती हो माँ तो मैं कल सवेरे ही चला जाऊंगा।

चंडालिनी :- [ बर्तन समेट कर झोंपड़ी की ओर जाते हुए...] तुझे भगवान को सौंप रही हूं, वही तेरी रक्षा करेंगे।

सुय्या :- [ जाती हुई माँ की ओर देख कर कुछ क्षण मौन रहता है ] लगता है भगवान की भी यही इच्छा है कि मैं कभी चैन



सुय्या

से न बैठूं । मुझे घर का सुख और शान्ति न मिले । [ दर्दभरी मुस्कान के साथ ] यदि सभी यही चाहते हैं तो मैं कर ही क्या सकता हूं ? मैं कल ही चल पड़ूंगा यह भूल कर कि मेरा एक घर है, माँ है, पत्नी है ।

[ सुय्या भी झोंपडी में चला जाता है । मध्य भाग का पर्दा फिर उठता है । पाठशाला का वही पंडित अपने कुछ शिष्यों के साथ प्रवेश करता है । वह बहुत प्रसन्न है । वह जिस लाठी के सहारे चल रहा है मंच के बीचों-बीच पहुंचकर उसी लाठी पर अपने शरीर का बोझ डाल देता है ]

गुरु :- लोग कहते हैं कि सुय्या ने राजकोष लूट लिया परन्तु वह यह नहीं जानते कि एक राजकोष रिक्त होने से हर एक घर का कोष भर जायेगा । लोग कहते हैं—राजा को भ्रम में डालकर, बूद्धू बनाकर स्वयं आनन्द ले रहा है कहीं । दास—दासियों को साथ लेकर नौका की सैर करता है वह । परन्तु लोगों का क्या है ? अंधे हैं । इसका क्या उपाय हो सकता है ?

एक :- गुरुदेव ! लोग यूं ही तो आलोचना नहीं करते । उनके कहने में कोई न कोई सच्चाई तो होगी ही ।

गुरु :- अवश्य होगी ! लोग व्यर्थ ही शोर नहीं मचाते । उन के कथन में सत्य है । केवल इतना ही सत्य के सुय्या नौकाओं में हजारों दीनार भर कर उन्हें जल देवता की भेंट चढ़ा देता है । वितस्ता नदी में राजकोष डुबो



सुय्या

देता है। जानते हो क्यों? इसलिए कि वितस्ता दान मांगती है......दान !

दूसरा :- गुरुदेव आपकी यह बात मेरी समझ में नहीं आई ?

गुरु :- अंत में समझा दूंगा। सुय्या वितस्ता में सोना और चांदी फेंक रहा है, लोगों को दिखा-दिखा कर दीनार इस में झोंक रहा है। डोंडी पीट कर ऐसा कर रहा है और कह रहा है—लोगो ! वितस्ता नदी में कूद पड़ो और इस सोने चांदी को अपने लिये समेट लो !

दूसरा :- परन्तु गुरुदेव इसका परिणाम क्या होगा ?

गुरु :- सुय्या केवल यह नहीं चाहता कि लोगों को दीनार प्राप्त हों। वह जानता है कि दीनार कुछ ही लोगों के हाथ लगेंगे। उसका मतलब कुछ और है ...।

एक :- फिर सुय्या इस से क्या प्राप्त करना चाहता है ?

गुरु :- यही कि लोग पानी में कूद पड़ें और दीनार प्राप्त करने के लिए इस के तल को कुरेद–कुरेद कर किनारों पर ले आयें। इससे वितस्ता में रुके हुए पत्थर, रेत और कीचड़ सब कुछ किनारों पर लाया जायेगा। इससे कई लाभ होंगे। पहला तो यह कि वितस्ता का तल गहरा हो जायेगा और दूसरे यह कि इसके किनारे ऊंचे हो जायेंगे। तुमने तो सुना ही होगा कि बहुत से स्थानों और देहातों से जल बाहर आने लगा है।



सुय्या

एक :- कैसे न आयेगा गुरुदेव ! जब वितस्ता का तल गहरा और इसके किनारे ऊंचे हो जायेंगे तब पानी तो निकलेगा ही।

गुरु :- अवश्य ही सुय्या मेरे और तुम्हारे समान एक साधारण मनुष्य नहीं है। उसे देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त है। वह उसकी रक्षा करते हैं। वही उसके मार्ग को प्रशस्त कर रहे हैं। यदि वह हमारे ही समान होता तो घर–बार छोड़कर न जाता। माँ की ममता, पत्नी का प्रेम और घर का सुख छोड़कर इस देश के लिए आबादकारी और सुख तथा शान्ति की खोज में नहीं जाता।

एक :- सुय्या यदि इसी प्रकार वितस्ता के तल को खोदता और इसके किनारों को ऊंचा करता गया तो नदी के दोनों किनारों को वश में किया जा सकेगा और बाढ़ का अपने–आप ही अंत हो जायेगा !

गुरु :- केवल इतना ही नहीं करना है सुय्या को। अभी उसे महापद्मासर की समस्या का समाधान भी ढूंढना है।

एक :- गुरुदेव इस समस्या का क्या ससाधान हो सकता है ?

गुरु :- भगवान जाने ! भगवान ने ही सुय्या को इसका ज्ञान भी दिया होगा। उसे अभी बहुत कुछ करना है। उसका मार्ग बड़ा कठिन और लम्बा है परन्तु मुझे पूर्ण बिश्वास है कि वह सफल होगा। हमारी यह धरती,

हमारा यह देश आबाद होगा। यहां के निवासी सुख शान्ति का जीवन बिता सकेंगे।

सरा:- भगवान करे ऐसा ही हो।

गुरु :- अच्छा तुम लोग पाठशाला चले चलो। मैं सुय्या की माता को देखकर आता हूं।

दूसरा:- जो आज्ञा गुरुदेव !

[पंडित दायें विंग से और उसके शिष्य बायें विंग से प्रस्थान करते हैं। मध्यभाग का पर्दा उठता है। एक साधारण सा ग्रामीण दृश्य सामने आता है ! सुय्या शीष झुकाये मंच पर इधर उधर घूम रहा है। उसके हाथ में बैद की एक पतली सी छड़ी है जिसके सिरे पर एक पत्ता झूल रहा है। दो-एक चक्कर काटने के बाद सुय्या मंच के बीचों-बीच आकर रुक जाता है और अपने आप से बातें करने लग जाता है ......

सुय्या :- चन्द्रा मां बनने जा रही है, मैं पिता बनने जा रहा हूं। मां ने सूचना भेजी है कि वे दोनों स्वस्थ हैं परन्तु मैं ठीक नहीं हूं। मेरा हृदय, मेरी आत्मा उनके लिये तड़प रही है। हाय मेरा दुर्भाग्य ! मैं यहां से एक क्षण के लिये भी कहीं नहीं जा सकता। अभी बहुत सा काम बाकी है। राजा ने भी मुझे पंद्रह-बीस दिनों के लिये घर जाने की अनुमति दी है। पर वह नहीं जानता कि अभी कितना कुछ बाकी है। यदि मैं काम अधूरा छोड़कर चला गया तो मज़दूरों का उत्साह ठंडा पड़



सुय्या

जायेगा। वह भी अपने–अपने घरों को भाग जायेंगे। हमें इस प्रकार जी-जान से काम करने की आदत भी तो नहीं। क्षण भर में घर की याद, बाल–बच्चों का प्रेम उमड़ आता है। हम वास्तव में बड़े ही प्यारभरे, प्रेमभरे व्यक्ति हैं न ?

[दूर से किसी व्यक्ति के जोर–जोर से रोने की आवाज़ आती है। सुय्या चौंक पड़ता है। रोने की आवाज़ के साथ–साथ कुछ शब्द भी सुनाई पड़ने लगते हैं। कुछ क्षण बीतने पर तीन मजदूर प्रवेश करते हैं। उनमें से एक रोए जा रहा है और दो उसकी बांहों को पकड़े हुए हैं]

सुय्या :- क्या बात है ? छोड़ दो इसे। यह रो क्यों रहा है ?

मज़दूर I :- महाराज ! यह भागने का यत्न कर रहा था।

सुय्या :- भागने का यत्न ? कहाँ ?

मज़दूर I :- यह पत्थर ढोने वाले टट्टू पर सवार होकर भाग रहा था। हम न देखते तो यह भाग ही गया था।

सुय्या :- [मजदूर के पास आकर] क्यों भैया ? कहां भाग रहा था तू ?

मजदूर II :- [रोते हुए] महाराज ! मैं आज आठ महीनों से घर से दूर हूं। मैं घर जाना चाहता हूं। मैं अपने नन्हे-नन्हे बच्चों के लिए तड़प रहा हूं ?

[ सुय्या को चक्कर सा आ जाता है और वह एक ओर हट कर खड़ा हो जाता है ]

मज़दूर II :- महाराज आपके कोई बच्चा नहीं इसी कारण आप इस पीड़ा को समझ नहीं सकते जो बच्चों से बिछुड़ कर मुझे हो रही है।

सुय्या :- [ क्रोधित होते हुए उसके मुंह पर भरपूर थप्पड़ मार कर ] बकवास बन्द कर !

मज़दूर II :- [ और जोर से चिल्ला कर ] महाराज यह सच है! मैं चुप नहीं रहूंगा। मैं तड़प रहा हूं, मैं दुखी हूं। मुझे घर जाने की अनुमति दीजिए। [ सुय्या के चरण छू कर] मैं आपको वचन देता हूं कि बच्चों का मुंह देखकर मैं लौट आऊंगा, लौट आऊंगा महाराज !

सुय्या :- परन्तु तू तो राजा का दास है और राजा का आदेश है कि जब तक सारा कार्य सफलतापूर्वक समाप्त न हो जाये कोई भी अपने घर नहीं जा सकता।

मजदूर II :- यह सच है महाराज ! परन्तु राजा क्या जाने कि क्या होती है विरह की तड़प। घर–गृहस्थी और बाल-बच्चों से महीनों तक दूर रहना कितना कठिन होता है। राजा तो उधर राजधानी में बैठा है न ?

सुय्या :- सावधानी से बात कर दुष्ट ! तू राजा के विरुद्ध बोल रहा है।



सुय्या

मजदूर II :- [ सुय्या के चरण छोड़कर उठता है ] मैं किसी के विरुद्ध नहीं बोल रहा, मैं केवल वही कुछ कह रहा हूं जो सच है।

सुय्या :- ऐसा सत्य किसी दिन तेरे प्राण लेकर रहेगा [ जाने लगता है ] जा और अपना काम कर !

मजदूर II :- [ सुय्या को सुनाते हुए ] लोग यूं ही नहीं कहते कि आप मनुष्य नहीं हैं। मशीनों की तरह आप को किसी से प्रेम नहीं, किसी से मोह नहीं...! आप सचमुच पत्थर हैं जिसमें कोई कामना, कोई भावना नहीं होती।

[ सुय्या क्रोधित होकर लौट आता है और उसे गिरेबान से पकड़कर झिझोड़ता है। फिर उसकी बांह ढीली हो जाती है और वह गिरेबान छोड़ देता है ]

सुय्या :- [ दूसरे मजदूरों से ] कल सवेरे यह आदमी अपने घर जा सकता है। इसे अपने घर तक की यात्रा के लिए सारी सुविधाएं दी जायें, यह हमारा आदेश है और इसका पालन करना तुम्हारा कर्त्तव्य होगा।

मजदूर I :- जो आज्ञा महाराज !

सुय्या :- [ पीड़ामय स्वर में ] इसे यह भी कह दो कि मैं भी एक मनुष्य हूं। पत्थर से फूटा हुआ नहीं हूं। मेरा भी इसी की भांति एक घर है, माँ है, पत्नी है जो गर्भवती



सुय्या

है। मेरी भी भावनाएं हैं, कामनाएं हैं। मैं भी मनुष्य हूं, पत्थर नहीं हूं।

मज़दूर II :- [ लज्जित होकर ] महाराज ! मुझे क्षमा कीजिए !

सुय्या :- [ उसकी ओर से मुंह फेरकर ] परन्तु यह सब होने पर भी मैं एक दूसरे ही प्रकार का व्यक्ति हूं। यह भी कह दो इससे कि मेरे जीवन का एक आदर्श है, एक नियम है और उन पर चलने से मेरा घर, मेरे घर वाले; भावनाएं और कामनाएं कभी भी मुझे रोक नहीं सकतीं। इस से कह दो कि जब तक वह आदर्श पूरा नहीं होता सुय्या को प्रेम और मोह की ज़ंजीरें जकड़ नहीं सकेंगी।

मज़दूर II :- [ उसके चरणों में गिर कर ] क्षमा कीजिये महाराज। मैंने आप को दुःखी बना दिया।

सुय्या :- [ उसे चरणों पर से उठाकर ] नहीं नहीं तूने मुझे कोई दुःख नहीं दिया।

मज़दूर II :- [ आंसू पोंछ कर ] महाराज ! मैं अब घर नहीं जाऊंगा। तब तक नहीं जाऊंगा जब तक कि हमारा काम और आपका आदर्श पूरा न हो जाये।

सुय्या :- [ उसे गले से लगाकर ] जीते रहो मेरे जवान ! जीते रहो !! पर अब तुम्हें अवश्य ही घर जाना पड़ेगा। तुम केवल अपने ही घर नहीं जाओगे, मेरे घर भी जाओगे...हाँ !

मज़दूर II :- [साश्चर्य] महाराज ?

सुय्या :- हाँ ! यदि तुम्हें समय मिले तो मेरे घर जाकर मेरी माता से कहना कि सुय्या तुम्हारे कहे को पूरा करने में लगा हुआ है और वह तब तक लौटकर नहीं आयेगा जब तक तुम्हारा स्वप्न साकार न हो जाये !

मज़दूर II :- मगर महाराज ...

सुय्या :- अब अगर मगर रहने दो। चलने की तैयारी करो। भगवान तुम्हें सुख–शान्ति से घर पहुंचा दें।

[उसे छोड़ देता है। तीनों मज़दूर आश्चर्य से उसे देखते हैं। अंत में तीनों प्रस्थान करते हैं। सुय्या बैद की छड़ी को दूर फैंक देता है और दोनों हाथों से सिर थाम कर चिल्लाता है...]

सुय्या :- मेरे प्रभु !

[दूर से जोर–जोर से हंसने की आवाज़ आ रही है। सुय्या चौंक कर सिर को ऊपर उठाता है]

कौन है ? कौन है जो मेरे बुरे कर्मों पर यूं हंसे जा रहा है ? कौन है जो मुझे यूं तड़पता देखकर आपे से बाहर हुआ जा रहा है ?

[सूत्रधार प्रवेश करता है]

सूत्रधार :- सुय्या ! क्या बात है ?

सुय्या -: [ दौड़कर उसके हाथों को अपने हाथों में ले लेता है ] तूने कुछ सुना ? लोग कहते हैं मैं पत्थर हूं और वह यह समझते ही नहीं कि मैं भी उन्हीं के समान एक मनुष्य हूं। क्या यह सच नहीं है कि मैं भी एक मनुष्य हूं ? मनुष्य की काया में आई हुई एक आत्मा ?

सूत्रधार -: निस्संदेह !

सुय्या -: फिर यह लोग ऐसा क्यों कहते हैं ?

सूत्रधार :- इसलिए कि तूने जो कार्य अपने जिम्मे लिया है वह आज तक किसी भी मनुष्य ने नहीं किया था। लोगों को विश्वास ही नहीं आता कि तू वितस्ता को भी अपने वश में कर सकता है। और अब जबकि तूने ऐसा किया है उन्हें आश्चर्य हो रहा है। उन्हें विश्वास ही नहीं होता कि ऐसा एक मनुष्य भी कर सकता है।

सुय्या :- तो इसमें मेरा दोष ही क्या है ?

सूत्रधार :- केवल इतना कि वितस्ता नदी को वश में करने के पश्चात तुझे इस कार्य को समाप्त कर देना चाहिये था।

सुय्या :- [ तेज के साथ ] कभी नहीं ! लोग मुझे भले ही पत्थर छोड़ राक्षस भी कहें, मैं पीछे नहीं हटूंगा। मुझे अभी बहुत कुछ करना है। महापद्मासर की समस्या



सुय्या

को सुलझाना है। लोग सोचते होंगे कि वितस्ता नदी गहरी हो गई, उसके किनारे ऊंचे हो गए। देहातों के साथ–साथ कुण्ड बनाए गए और इससे बाढ़ से मुक्ति मिल गई ?

सूत्रधार :- [बुद्धूओं की तरह] अरे भाई मुझे इससे क्या लेना-देना ! तू जाने और वह जानें।

सुय्या :- काश ! वह भी जान पाते ! माध्यराज्य और यम–राज्य के गाँव और नगर बाढ़ से मुक्त हो गए परन्तु 'कामराज्य का क्या सोचा है ?

सूत्रधार :- स्वयं सोच ले यार, मुझे क्यों सता रहा है ?

सुय्या :- महापद्मासर का क्या करोगे ?

सूत्रधार :- सिंघाड़े चुनेंगे, मछली मारेंगे। और क्या करना है ?

सुय्या :- ओ...हो...सिंघाड़े चुनने और मछली मारने वाले ही जब न होंगे तो उस झील की शोभा ही जाती रहेगी... है न ?

सूत्रधार :- भगवान जानें ?

सुय्या :- मैं भी जानता हूं। महापद्मासर में सहनशक्ति नहीं। यह झील अपने किनारों से ऊपर उछलती है।

सूत्रधार :- इस सागर के तल को साफ करना असम्भव है !



सुय्या

सुय्या :- जानता हूं ! परन्तु वितस्ता नदी की बाढ़ का पानी ज्यों ही इस झील में उतरता है झील मानो जैसे पलट कर नदी में घुसी चली आती है। पलट कर आया हुआ बाढ़ का पानी अपने साथ सब कुछ बहा ले जाता है। आस-पास के सारे देहात डूब जाते हैं, वितस्ता के बहाव में बाधा पड़ जाती है !

सूत्रधार :- होगा !

सुय्या :- जानकार होने पर भी अनजान बनता है!

सूत्रधार :- मुझे क्या है इससे ! यह तो एक मानवीय समस्या है। मुझे इससे मतलब ?

सुय्या :- मानवीय समस्या थी तो मुझे इस को सुलझाने के लिए क्यों इस धरती पर ले आये थे ?

सूत्रधार :- [ गम्भीरता के साथ ] बड़ी गलतफ़हमी हो रही है अपने विषय में तुझे ?

सुय्या :- नहीं ! कोई गलतफ़हमी नहीं है। यह तो मैं भी जानता हूं कि मैं कौन हूं ?

सूत्रधार :- कौन हो ?

सुय्या :- देवलोक से उतरा हुआ एक पत्थर जिसके हृदय में कामनाएं नहीं, भावनाएं नहीं।

सूत्रधार :- [ खुल कर हंसते हुए ] देवलोक के निवासियों को सोमरस पीने और अप्सराओं का नृत्य देखने के अतिरिक्त कोई कार्य हो जब न ? यदि वह भी इस धरती की विभिन्न समस्याओं को सुलझाने के योग्य होते तब मनुष्य को जन्म ही क्यों दिया जाता ? [ कुछ क्षण ठहर कर सतेज वाणी में ] सुय्या !

सुय्या :- [ हाथ जोड़कर ] महाराज !

सूत्रधार :- तूने मुझे पहचान लिया और मैंने तुझे। मैंने कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं की परन्तु तेरी प्रतीक्षा करते करते मेरी आंखें थक गईं।

सुय्या :- आपका अनुगृह है महाराज !

सूत्रधार :- महापद्मासर की समस्या भी तुझे ही सुलझानी है।

सुय्या :- जानता हूं और इसका ज्ञान भी रखता हूं। परन्तु महाराज इस से पहले मेरा एक काम कर दीजिये !

त्रधार :- बोल क्या काम है ?

सुय्या :- [ अपनी छाती पर से कपड़ा हटाते हुए बड़े ही पीड़ित स्वर में ] मेरी छाती को चीर कर इसमें से मेरा हृदय निकाल दीजिए और उसकी जगह सचमुच का एक पत्थर वहां रख दीजिए। ऐसा होने से मैं संसार के बन्धनों से मुक्त हो जाऊंगा !

सूत्रधार :- [ ठठा कर हंसते हुए ] हा...हा...हा ! बुद्धू कहीं का । इतना ज्ञानी होकर भी एक छोटा सा सत्य नहीं जानता । जो कुछ भी तूने किया है, मुट्ठी भर मांस के इसी टुकड़े ने कराया है तुझसे । यही युग प्रवर्तक है, अंधियारे में उजला सितारा । इस की भावना, इस की कामना ही सही शक्ति है । नहीं तो तू तो फूटी कौड़ी का मोल भी नहीं रखता था । गन्तव्य की राह सुझाने वाला यह हृदय न हो तो मनुष्य घड़ी भर के लिए भी यहां जीवित नहीं रह सकता ।

सुय्या :- परन्तु गन्तव्य अभी दूर है !

सूत्रधार :- तेरे हृदय से भी दूर है क्या ?

सुय्या :- नहीं, मेरे हृदय के पास है । इस की धक–धक में चमक रहा है ! उसकी कामनाओं में झलक रहा है ।

सूत्रधार :- तो फिर किस चीज़ की आवश्यकता है तुझे ? [ फिर बुद्धू बन कर ] जाने मैं क्या बक–बक कर रहा हूं इसके साथ । यह तो मेरे पीछे ही पड़ गया ।

[ प्रस्थान करता है । सुय्या सस्मित उस की ओर देखता रहता है ]

सुय्या :- मेरी शक्ति, मेरा साहस ? नहीं नहीं...यह बात नहीं है । [ गम्भीरता के साथ ] मेरी माता की शक्ति ! उसका साहस ! चन्द्रा का प्यार ! उसकी तड़पन !

सुय्या

माँ का आशीर्वाद ! चन्द्रा के आंसू...नहीं तो मैं हूं ही क्या ? जो कुछ भी हूं माँ की ममता और चन्द्रा के प्रेम के कारण हूं। खैर ! यदि मैं उस शक्तिशाली भाग्यवान माता का सपूत हूं तो महापद्मासर की समस्या को भी सुलझाकर ही रहूंगा। लोगों को भ्रम हो रहा है कि देवता मेरी सहायता कर रहे हैं, वह नहीं जानते कि वास्तव में यह सब कुछ मेरे हृदय और मेरे प्रेम न किया है।

[ प्रस्थान करता है। मध्यभाग का पर्दा गिरता है। मंच के सामने वाले भाग में मंत्री और जयदेव सहित राजा प्रवेश करता है ]

राजा :- हम सचमुच भाग्यवान हैं। यह हमारे अच्छे कर्मों का फल है कि सुय्या हमारे शासनकाल में पैदा हुए। हमारा नाम सुय्या के कारण लिया जायेगा। उन्होंने वह कर दिखाया जो आज तक कोई भी न कर पाया था। ललितादित्य जैसा महान और बलवान नरेश भी इस समस्या के आगे हार मान चुका था। सुय्या ने बाढ़ की रोक-थाम की। अकाल और महामारी का युग समाप्त हो गया। भूख मिट गई। सुख और शान्ति फैल गई। हम इसके लिए पंडित सुय्या के आभारी हैं। [ जयदेव से ] जयदेव !

जयदेव :- आज्ञा महाराज !



सुय्या

राजा :- कौन विश्वास कर सकता था कि महापद्मासर की समस्या का भी हल निकलेगा ?

जयदेव :- हम में से कोई सोच भी नहीं सकता था। परन्तु पंडित सुय्या की माता कहती थीं कि सुय्या यह समस्या भी सुलझाकर रहेंगे।

राजा :- बड़ी भाग्यवान है उनकी माता !

जयदेव :- हाँ महाराज ! यदि ऐसी ही माताएं हों तो इस धरती पर किसी भी चीज़ की कमी नहीं रहेगी। यह सारी धरती, यह सारा संसार बस जायेगा महाराज !

राजा :- हम उस महान देवी के दर्शन करना चाहते हैं।

जयदेव :- आपकी आज्ञा का पालन होगा महाराज !

राजा :- नहीं नहीं ! हम आज्ञा नहीं देते। अपनी एक अभिलाषा बताते हैं। उस देवी के दर्शनों से शायद हमारे इस जीवन की कोई गुप्त कामना, कोई अभिलाषा, कोई भावना पूरी होगी। हम सोचते हैं कि यदि राजभवनों में भी ऐसी ही माताएं जन्म लें तब तो किसी चीज़ पर ज़वाल नहीं आयेगा। ऐसी स्त्रियां राजाओं और सम्राटों को उचित मार्ग पर ले आयेंगी। [सहसा कुछ याद आ जाने पर] परन्तु जयदेव ! सुय्या अब लौट कर क्यों नहीं आते ?

यदेव :- महाराज ! वह कहते हैं कि वितस्ता के किनारों पर अभी बहुत से स्थानों पर बांध बांधने हैं ताकि नदी का पानी कभी भी किनारे तोड़कर देहातों में न आ सके !

ाजा :- धन्य हो ! और लोग उसे पागल कह रहे थे। कह रहे थे—राजकोष लूट रहा है। जाने अब वे लोग क्या कहते होंगे ? [ मंत्री से सम्बोधित होकर ] क्यों मंत्री ?

त्री :- महाराज वही लोग अब पंडित सुय्या को आशीर्वाद दे रहे हैं। उनकी राहों में फूलों की वर्षा कर रहे हैं। उन्हें कल्याणकारी कहते हैं !

राजा :- और तुम क्या कह रहे हो ?

मंत्री :- [ थोड़ा झिझक कर ] महाराज ! पहले तो मुझे उन से बड़ी घृणा हुई थी ! मैंने उन्हें पागल और बावला कहा था। इसके लिए मैं क्षमा चाहता हूं !

राजा :- क्षमा हमसे नहीं उनसे मांगो !

जयदेव :- महाराज ! सुय्या को इस बात का कोई खेद नहीं कि पहले-पहल लोगों ने उन्हें क्या कहा था। वह तो इस बात पर प्रसन्न हैं कि उन्होंने अपना कर्त्तव्य निभाया है और जिस कार्य के लिए उन्होंने जन्म लिया था वह आदर्श, वह कार्य उन्होंने सफलता के साथ पूरा किया है।



सुय्या

राजा :- धन्य हो सुय्या ! धन्य हो ! [ जयदेव से ] जयदेव ?

जयदेव :- हाँ महाराज ?

राजा :- पंडित सुय्या को हमारी ओर से संदेश भेजा जाये कि वह दस-पंद्रह दिन तक राजधानी लौट आयें। हम उनके सम्मानार्थ एक महान उत्सव का आयोजन करना चाहते हैं।

जयदेव :- जो आज्ञा महाराज ! हरकारे कल ही भेज दिये जायेंगे।

राजा :- और मंत्री...।

मंत्री :- आज्ञा महाराज ?

राजा :- चारों ओर ढिंढोरा पीट दिया जाये कि आने वाले पखवाड़े के बृहस्पतिवार को सारे नगर में हर्षोल्लास का उत्सव मनाया जायेगा। राजधानी में एक महान सभा होगी। लोगों के लिए भंडारों के द्वार खुले छोड़ दिए जायेंगे। सारे नगरवासियों को चाहिए कि वह इस उत्सव में भाग लेकर पंडित सुय्या के दर्शन करें।

मंत्री :- जैसी महाराज की आज्ञा हो...।

राजा :- जयदेव !

जयदेव :- हां महाराज ?

राजा :- नगर—नगर से और घाटी भर से नृतक और संगीतकार इस अवसर पर यहां बुलाये जायें और हर छोटे—बड़े नगर और ग्राम में नृत्य और संगीत--सभाओं का प्रबन्ध किया जाये। ऐसा उत्सव मनाया जाये कि सब लोग अंतिम समय तक इसे याद करें। इस कार्य पर जितने भी दीनार खर्च हों वह हमारे निजी भंडार से प्राप्त किए जायें।

जयदेव :- महाराज की जय हो !

राजा :- हम इस दिन को बड़ी शान के साथ मनाना चाहते हैं। जानते हो क्यों ?

जयदेव :- क्यों महाराज ?

राजा :- इसलिए जयदेव कि ऐसे दिन बार—बार नहीं आते। कोई एक युग होता है, कोई एक क्षण होता है जबकि इतिहास में, किसी राष्ट्र के जीवन में ऐसे दिन आते हैं और ऐसे दिनों पर केवल धरती के निवासी ही गर्व और मान नहीं करते आकाशवासी देवता भी ऐसे अवसर पर हर्षोल्लास से उन्मत्त होकर नाचते-- गाते हैं। वह प्रसन्न होकर मनुष्य को लम्बी आयु का वरदान देते हैं। धरती पर आशीर्वाद के पुष्प बरसाते हैं और हमारी यह धरती एक नई-नवेली दुल्हन की भांति नये वस्त्र पहनती है, ऐसी भाग्यवान माता बनती है जिसके लाल अपनी माँ का वचन पूरा करके दिखाते हैं !

जयदेव :- महाराज !

राजा :- [ कुछ सम्भल कर ] ओह ! हम तो कविता करने लग गये थे। सुय्या जिन्दा रहें, उनकी माता की आयु लम्बी हो !

जयदेव :- महाराज ! सुय्या सचमुच प्रशंसा के योग्य हैं। उनके कृत्यों का वर्णन करने के लिए एक नहीं अनेक पुस्तकें लिखी जा सकती हैं।

राजा :- सत्य है जयदेव ! परन्तु यह सत्य नहीं है क्या कि हम स्वयं भी बड़े भाग्यवान हैं ? सुय्या हमारे समय में ही हुए, हमें इस पर बड़ा गर्व है। और यह गर्व भी हमें ही प्राप्त होगा कि हम सब से पहले स्वयं ही उनका स्वागत करेंगे। [ मंत्री से ] मंत्री !

मंत्री :- आज्ञा महाराज ?

[ राजा, जयदेव और मंत्री प्रस्थान करते हैं। मंच पर प्रकाश बुझ जाता है। इसी बीच मध्य भाग का पर्दा धीरे-धीरे ऊपर उठता है। हर दिशा से मंच पर प्रकाश बिखरने लगता है। मंच पर का अंतिम पर्दा भी उठ चुका है। चारों ओर दीप-माला की गई है। दृश्य साधारण ही है—कोई चौराहा या राजभवन का कोई बाहरी भाग। नेपथ्य से शहनाइयों और ढोल के बजने का स्वर सुनाई दे रहा है। शहनाई वालों का स्वर तेज है। लोगों के नाचने गाने का शोर उभरता है। पर्दा उठने के कुछ क्षण पश्चात

ही कुछ पुरुष हाथों में पुष्पमालायें लिए प्रवेश करते हैं। सूत्रधार एक ओर पत्थर पर बैठा हुआ है। वह चुप और गम्भीर सा लग रहा है। जोर-जोर से बोलते हुए कुछ और लोग प्रवेश करते हैं...]

पहला :- न जाने क्यों इतनी देर लगा दी...?

दूसरा :- भगवान जानें! कहते हैं राजा कुछ घबराया हुआ है।

तीसरा :- इसमें घबराने की क्या बात है? राजा के आदमियों ने सूचना दी है कि पंडित सुय्या जहां जहां से भी गुजरते हैं, लोग वहां वहां उन की राहों में फूलों की वर्षा करते हैं। वह उनके चरणों की धूल अपने माथे से लगा रहे हैं, उनकी जय जयकार कर रहे हैं। इसी कारण उन्हें देर हो रही होगी।

पहला :- कहते हैं कि राजा स्वयं ही यह देखने निकला है कि आज के उत्सव में किसी प्रकार की कोई कमी तो नहीं रह गई है।

दूसरा :- ओहो! तुम लोग तो बातों में समय गंवा रहे हो। चलो न, हम भी कहीं नृत्य आदि देखते हैं।

तीसरा :- नहीं! गाना सुनते हैं भाई।

पहला :- ओहो! चलो गाना ही सुनते हैं। अब यहां से चलो भी!

[तीनों प्रस्थान करते हैं। हाथों में पुष्पमालायें लिए वह पहले पुरुष भी उनके साथ ही प्रस्थान करते हैं।

सूत्रधार इन जाते हुए पुरुषों को व्यंग्यमय मुस्कान के साथ देखने के पश्चात बड़ा निराश सा अपने सिर को हिलाता है। इसी अवधि में राजा, मंत्री, जयदेव और दरबारी प्रवेश करते हैं। राजा मंच के मध्य भाग में पहुंचते-पहुंचते व्याकुल सा हो उठता है और मच का एक चक्कर काटकर रुक जाता है ]

राजा :- जाने इतनी देर क्यों लगा रहे हैं सुय्या ? सूर्यास्त हो गया। शगुन निकला जा रहा है, जाने क्या कुछ देखना होगा ?

जयदेव :- महाराज ! यूं घबराने की कोई बात नहीं, आ ही रहे होंगे।

राजा :- हमसे तो कहा गया था कि वह यहां से कुछ कोस दूर हैं। तब से इतना समय बीत गया; फिर आये क्यों नहीं अब तक? भगवान करें सुय्या ठीक ही हों। हमें लगता है कि कुछ होने वाला है।

[ सूत्रधार पत्थर पर से उठ खड़ा होता है और हंसते-हंसते राजा की ओर देखता है परन्तु राजा उसकी उपस्थिति से अनभिज्ञ बना रहता है ]

मंत्री :- महाराज ! पंडित सुय्या की माता कुछ अस्वस्थ हैं !

राजा :- [ चौंक कर ] क्या कहा ?

मंत्री :- [ भयभीत होकर ] हां महाराज ! वह कुछ बीमार हैं।



सुय्या

राजा :- [ गरज कर ] पंडित सुय्या की माता बीमार हैं और हमें अब बताया जा रहा है ? अब तक हमें क्यों नहीं बताया गया ?

मंत्री :- महाराज ! हमने उचित नहीं जाना। आज इस उत्सव के अवसर पर...!

राजा :- हर्षोल्लास का उत्सव जिनके कारण सम्भव हुआ है, वह बीमार हों और...[ गरज कर ] मंत्री !

मंत्री :- [ डर कर ] महाराज !

राजा :- जानते हो तुमने क्या किया है ?

मंत्री :- [ डरी हुई वाणी में ] महाराज ?

राजा :- तुम से बहुत बड़ा अपराध हुआ है। नहीं, अपराध नहीं, तुमने बहुत बड़ा पाप किया है। ऐसा पाप जिसमें हम भी उलझ गए हैं !

मंत्री :- परन्तु महाराज...?

राजा :- बस मंत्री बस ! यदि हम आज का यह दिन देख रहे हैं तो यह उसी भाग्यवान के कारण है। उसी ने सुय्या को कल्याणकारी, भला करने और भला चाहने वाला बनाया है। [ मंत्री को घूर कर देखते हुए ] वही माता बीमार हों और हमें समय पर सूचित भी न किया जाये ? मंत्री !

मंत्री :- महाराज !

राजा :- तुमने बड़ा अपराध किया है और महाराज अवन्ति-वर्मन किसी के अपराध को क्षमा नहीं करते !

मंत्री :- क्षमा कीजिए महाराज !

जयदेव :- महाराज ! ऐसे अवसर पर, हर्षोल्लास की इस घड़ी में यदि आप उचित समझें तो अबकी बार, केवल अब की बार, इन्हें क्षमा कर दीजिए !

राजा :- [ क्रोधित होकर ] जयदेव !

जयदेव :-...और महाराज मुझे अनुमति दीजिए कि मैं पंडित सुय्या के घर हो आऊं और उनकी माता को देख आऊं !

राजा :- [ क्रोध दबा कर ] हूंह् ! हम स्वयं ही वहां जाते जयदेव परन्तु यहां कहीं ऐसे में पंडित सुय्या आ गए तो...! ठीक है ! तुम जल्दी ही जाओ। राजवैद्य को साथ ले जाओ।

मंत्री :- महाराज ! राजवैद्य को मैंने पहले ही वहां भेज दिया है !

राजा :- जयदेव ! देख क्या रहे हो ? शीघ्र चले जाओ और हमें उनकी दशा के विषय में सूचित करो।

[ जयदेव प्रस्थान करता है। राजा एक बार फिर मंच पर इधर-उधर घूमने लगता है। सूत्रधार उसकी ओर

देखकर निराश सा सिर को हिलाता है। नेपथ्य से आते नृत्य एवं संगीत के स्वर धीरे-धीरे धीमे पड़ने लगते हैं ]

राजा :- हम तो जानते ही थे कि कुछ होने वाला है। फिर भी भगवान ने दया की कि केवल इतना ही हुआ। सुय्या की माता ठीक हो जायेंगी। सुय्या का मुख देखते ही उनकी पीड़ा जाती रहेगी ।

[ राजा अन्तिम शब्द बोलते-बोलते तेजी से प्रस्थान करता है । मंत्री और दरबारी भी उसके पीछे-पीछे जाते हैं। सूत्रधार मंच के बीचों-बीच आकर खड़ा हो जाता है ]

सूत्रधार :- यह दीपमालायें क्यों ? यह हर्षोल्लास किस लिए। दीप बुझ जायेंगे। हर्षोल्लास समाप्त हो जायेगा। किसी का समय आ रहा हैं [ हंसते हुए स्वयं अपने से सम्बोधित होकर ] हा...हा...हा...! समय का चक्कर पूरा हो रहा है। नहीं...नहीं...अभी नहीं...किसी की प्रतीक्षा कर रहा है। जाने कब का पूरा हो चुका होता परन्तु उसकी ममता का क्या किया जाए ? परन्तु वह यहां आती क्यों नहीं ? यहां आकर देखती क्यों नहीं कि सुय्या के लिए सारी राजधानी को दुल्हन की तरह सजाया-संवारा गया है ? वह आकर देखती क्यों नहीं कि राजा अवन्तिबर्मन उसके बेटे के दर्शन करने के लिए बावला हो रहा है ? उसे अब आना ही चाहिए। उसे आकर यह सब देखना ही चाहिए !

[ नेपथ्य में संगीत एवं नृत्य के स्वर तीव्र होने लगते हैं। सूत्रधार एक बार फिर मौन होकर पत्थर पर बैठ जाता है। गाने-बजाने के स्वर चरमोत्कर्ष पर पहुँच जाते हैं। एक विंग से जयदेव और चन्द्रकान्ता बीमार चंडालिनी को थामे हुए प्रवेश करते हैं। मंदिर की घंटियों और शंखनाद का स्वर गूंजता है। चंडालिनी बहुत निर्बल हो चुकी है। वह जयदेव और चन्द्रकान्ता से अपना आप छुड़ाकर इधर उधर देखती है और हंसते-हंसते ही आंसू बहाने लग जाती है। जयदेव और चन्द्रकान्ता उसकी इस अवस्था को देख अचरज में पड़ जाते हैं ]

चन्द्रा :- माँ !

चंडालिनी :- चन्द्रा ! देख रही है न तू ? तेरे स्वामी का मान कितना बढ़ गया है और तू यूं ही चिन्तित हो रही थी। कहती थी कि मुझे किस के सहारे छोड़कर जा रहे हैं, मैं क्या करूं ? है न ?

चन्द्रा :- [ भयभीत होकर ] माँ !

चंडालिनी :- परन्तु चन्द्रा देर लगा रहा है वह तो, बहुत ही देर !

चन्द्रा :- आ रहे होंगे माँ। तुम धीरज धरो !

चंडालिनी :- धीरज ? नहीं, कोई कहां तक धीरज धरता रहे ?

चन्द्रा :- माँ ?



सुय्या

चंडालिनी :- देख न, मुझे स्वयं ही देर हो रही है !

जयदेव :- माताजी ! आप घबराइये नहीं, वह आ ही रहे होंगे !

चंडालिनी :- बेटे उसका मुख देखना चाहती हूं ! केवल एक बार...!

चन्द्रा :- माँ ! ऐसा क्यों कहती हो ?

चंडालिनी :- अच्छा बेटी यह भी नहीं कहती मैं, पर तू तो उसे कह दे कि जल्दी आए ! उसकी माँ प्रतीक्षा कर रही है। [ उसे चक्कर आ जाता है। जयदेव और चन्द्र-कान्ता उसे सम्भालते हैं ] देख री चन्द्रा मुझ से रहा भी न गया। दौड़ते-भागते लोगों की ऐसी भीड़ में निकल आई। मानो कोई जबरदस्ती यहां ले आया हो मुझे !

जयदेव :- माता जी ! आप निश्चिन्त रहिए। पंडित सुय्या आ ही रहे होंगे !

चंडालिनी :- हाँ बेटे ! मैं तो निश्चिन्त ही हूं ! पर क्या करूं ? माँ हूं न ? उस का मुख देखने के लिए व्याकुल हो रही हूं।

[ नेपथ्य-संगीत की गति और अधिक तेज हो जाती है। साथ ही जय-जयकार का शोर भी उभरता है ]

मंच के बाहर से एक आवाज़ :- पंडित सुय्या की...

मंच के बाहर से बहुत सी आवाज़ें :- जय......

[ यह आवाजें कई बार आती हैं। चंडालिनी और अधिक व्याकुल हो उठती है। ]

चंडालिनी :- [ प्रसन्नता से ] चन्द्रा ! आ गया क्या ?

चन्द्रा :- हां माँ, आ गये !

चंडालिनी :- ओह ! फिर देर कर रहा है वह तो। कह दे तुरंत चला आए, तुरंत...

[सुय्या कुछ लोगों के साथ प्रवेश करता है। उसके गले में फूलों की मालायें हैं। चंडालिनी को देखते ही वह दौड़कर उसके पास आ जाता है। पुष्पमालाओं को गले में से निकालकर उसके चरणों में ढेर कर देता है और फिर स्वयं भी उसके चरणों में बैठ जाता है। कुछ क्षण बाद उठकर बड़ी व्यग्रता से चंडालिनी को अपनी बांहों में भींच लेता है। ]

सुय्या :- माँ ! ओह माँ !

चंडालिनी :- [ क्षीण स्वर में उसके शीष और मुख पर हाथ फेरते हुए ] आ गया रे तू ?

[ यही कहते–कहते उसका हाथ रुक जाता है। सिर एक ओर झुक जाता है। चन्द्रकान्ता और जयदेव उसे थाम लेते हैं। सुय्या बावला सा होकर उसे गले से लगा लेता है ]

सुय्या :- माँ...माँ...!

[ चंडालिनी को नीचे लिटा देते हैं। नेपथ्य–संगीत रुकने लगता है और चंडालिनी आखें खोलती है ]

डालिनी :- सुय्या !

य्या :- हां माँ ?

डालिनी :- यह गाना बजाना क्यों थम रहा है ? इसे कौन बन्द करवा रहा है ? नहीं...नहीं...इनसे कह दे कि हंसें, गाएं, नाचें। यह तो हर्षोल्लास का अवसर है । बहुत ही बड़ा उत्सव...!

ुय्या :- माँ !

चंडालिनी :- चन्द्रा बेटी अपने स्वामी को सम्भाल। इसे अब तेरे ही हाथों में सौंप रही हूं...!

[ इतना कहते–कहते प्राण त्याग देती है। सुय्या बावला सा हो जाता है और चंडालिनी के शव के साथ लिपट जाता है। चन्द्रकान्ता भी चंडालिनी के चरणों पर सिर रख कर सिसकने लगती है। कुछ क्षण ऐसे ही बीत जाते हैं। सुय्या धीरे–धीरे चंडालिनी के शव को छोड़कर उठता है और दोनों हाथ जोड़कर बड़े आदर और श्रद्धा के साथ शव के सामने खड़ा हो जाता है। राजा और उसके दरबारी प्रवेश करते हैं। वे सब एक–एक कर चंडालिनी के शव पर पुष्पमालायें चढ़ाते हैं और उसे नमस्कार करते हैं ]



सुय्या

राजा :- [ कुछ क्षण बीत जाने पर ] सुय्या !

सुय्या :- [ दुखित स्वर में ] महाराज !

राजा :- हमें बड़ा खेद है कि इस अवसर पर यह अनर्थ हुआ ।

सुय्या :- महाराज ! मेरी माता को शायद यही दिन देखने की अभिलाषा थी । वह सम्भवतः इसी क्षण की प्रतीक्षा कर रही थीं ।

राजा :- [ जयदेव से ] जयदेव !

जयदेव :- हां महाराज ?

राजा :- इनकी माता का शव उठवा कर राज–भवन में पहुंचाने का प्रबन्ध करो । हम उनका अन्तिम संस्कार अपने राज्य के नियमों के अनुसार करना चाहते हैं ।

जयदेव :- जो आज्ञा महाराज !

सुय्या :- नहीं नहीं महाराज ! ऐसा न कीजिए । मेरी माता को अपने घर से बड़ा प्यार था, उसे अपने आंगन से प्रेम था । मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं इन्हें वहीं ले जाऊं । इन्हें केवल उसी वातावरण में सुख मिलेगा । इनकी आत्मा को वहीं शान्ति प्राप्त होगी महाराज !

[ चंडालिनी का शव उठाया जाता है । सारे लोग शव के पीछे-पीछे चलते हुए मंच पर से प्रस्थान करते हैं । सूत्रधार पत्थर पर से उठकर आता है । दीपमालायें बुझने लगी हैं । संगीत थमने लगा है । सूत्रधार जाते हुए लोगों की

ओर मुड़कर उन्हें नमस्कार करता है। कुछ झुककर बड़े आदर और श्रद्धा के साथ कहता है...]

त्रधार :- ओ मनुष्य ! तू जो चाहेगा करेगा। मैं तुम्हारी शक्ति और तुम्हारे बल के आगे अपना शीष झुकाता हूं ! तुम्हारी जय जयकार हो ! जय जयकार हो तुम्हारी !

[ अपना शीष पूरी तरह झुकाता है और इस के साथ ही पर्दा गिरता है ]

JAMMU AND KASHMIR

ACADEMY OF ART CULTURE & LANGUAGES